AANKHEN NAAM HAIN……

BY CHANDRA PRABHAKAR

INDEX

1. गा लें कुछ गीत यहाँ हम भी। 7

2. किस सुख को खोज रहे हैं हम। 8

3. जीवन के तू खेल खेल ले। 8

4. निज का बोझ न हमसे उठता। 9

5. पत्ते हवा में उड़ रहे हैं। 9

6. एक गम हो तो कहें हम। 10

7. लुटते यहाँ आँख के मोती। 10

8. जो कहते थे साथ रहेंगे। 11

9. जी रहे नहीं निज का जीवन। 11

10. सबकी अपनी यहाँ प्रतीक्षा। 12

11. मेरे नाविक तू ले चल अब। 12

12. चलते चले जग में। 13

13. मैं तुमसें कुछ भी ना चाहूँ। 13

14. पिंजड़े का पंछी उड़ न सके। 14

15. गीतों में है रूदन छिपा क्यों। 14

16. बन्धन यह कर्मों के ले कर 15

17. बुरा नहीं तू मान जगत में। 15

18. चलते रहे नहीं पहुँचे हम। 16

19. चुपचाप चले चल नहीं उलझ। 16

20. जीवन यहाँ बहुत अद्भुत है। 17

21. तुमको निहारते हम रहे। 17

22. बोल मत बस चुप रहो तुम। 18

23. तेरी अन्टी में नोट छिपे। 18

24. जिन्दगी क्या गीत गाती। 19

25. दो दिन का है रैन बसेरा। 19

26. शाश्वत क्या है यहाँ पर जो। 20

27. गम की आंधी से नहीं डरो। 20

28. दो पल यहाँ पर खेल ले तू। 21

29. थक गये यहाँ चलते चलते। 21

30. जीवन नदिया बही जा रही। 22

31. मेरे सुपने सभी लुट गये। 22

32. कौन अच्छा है बुरा है। 23

33. आँखें नम है खामोशी। 23

34. जमाने से शिकायत क्या। 24

35. मत उलझ व्यर्थ की बातों में 25

36. दर्द तुमने जो दिया है। 25

37. कठिन शिलाओं का भेदन कर। 26

38. खत लिखे उसको पढ़कर रोते हैं। 26

39. कौन कैसा है यहाँ पर। 27

40 . वासना सबकी यहाँ पर। 27

41. ले चल अपने साथ मुझे तू। 28

42. जलना तो पड़ता ही है। 28

43. पागल हुआ क्यों जा रहा। 29

44. तुम रूठ गये हम टूट गये। 29

45. आंख फेरी तूने। 30

46. पंछी उड़ते फिरें गगन में। 30

47. कौन जायें छोड़ कब । 31

48. मातृभूमि की पूजा करते। 31

49. अपनी तो दुनिया लुटती। 32

50. मैं कहूँ कुछ भी न तुमको। 32

51. आंसू को पीते हैं। 33

52. अनजान पथ का हूँ मुसाफिर 33

53. खोजा बहुत न तुमको पाया। 34

54. चाहता हूँ आज रोना। 34

55. दुर्भाग्य किया पीछा मेरा। 35

56. ना मिला दीदार तेरा। 3557. कैसे अपना दिल दिखलाऊँ। 36

58. वासना के रंग इतने। 36

59. कटती ही नहीं यह रैना। 37

60. जलता रहा सदा जीवन भर। 37

61 बना हम सफर गया किधर। 38

62. बिताई जिन्दगी हमने। 38

63. जो हम सोंचे वह तू सोचे। 39

64. मुरझाने को फूल खिल रहा। 39

65. टूटे भी तो ऐसे टूटे। 40

66. कहना बन्द हुआ सब अपना। 40

67. बोले तुम ना हम रोये पर। 41

68. मत कर मत कर जग से शिकवा 41

69. आंसू को तुम देख सके ना। 42

70. चले जा रहे जाने बाले। 42

71. बना हाय तू मुझ पर निष्ठुर। 43

72. जाते पल कुछ हैं बाकी। 43

73. चलते चलते हम थके। 44

74. काफिला यह जा रहा है। 44

75. दुख से आंखें बोझिल इतनी। 45

76. मन समझ बढ़ा ना बैर यहाँ। 45

77. चहूँ ओर विचरते भूत प्रेत। 46

78. कहने वाले सब मिले यहाँ। 47

79. यह जीवन भागता जाता। 47

80. तुमको हमसे है शिकायत। 48

81. टूटे भी तो ऐसे टूटे। 48

82. चले चल कर हम न पहुँचे। 49

83. नयन ने गंगा बहाई। 49

84. मन को लगाते हैं यहाँ। 50

85. जलता अंधियारी रातें। 5086. यहाँ पर खेलता है रब। 51

87. क्या गलत है क्या सही है। 51

88. दर्द तुमने दे दिया है। 52

89. चलते चलते मिट जाना है। 52

90. यहाँ मालिक की है मर्जी। 53

91. चलते ही हमें है जाना। 53

92. मन कितने सुपने बने मिटें। 54

93. गिरे आंसू न देखे कोई। 54

94. जान सका ना सब कुछ बोझिल। 55

95. किस जगह पर हम गिरेंगे। 55

96. दिल लगे करें हैं कोशिश 56

97. चल मन निभा दे तू यहाँ। 56

98. प्यारे इन पल को जी ले। 57

99. गीत अपने गा के सो जा। 57

100. जीवन नदिया बहती जाती। 58

101. दो पल खुशी हमको मिले। 58

102. कुछ भी नहीं यहाँ मैं। 59

103. प्यार मिले तो रस्ता दीखे। 59

104. यह जिन्दगी बस फ्लाप है। 60

105. एक गम हो तो कहें 60

106. अलविदा अब दोस्त प्यारों। 61

107. प्यार तुझी से करते। 61

108. मन से मन को समझा पागल। 62

109. नयन के ना नीर देखे। 62

110. दिन उगता दिन छिप जाता है। 63

111. किस्मत मेरी ऐसी है। 63

112. दिल नहीं लगता यहाँ पर। 64

113. किस जगह पर हम गिरेगें। 64

AANKHEN NAAM HAIN……

1ण

गा लें कुछ गीत यहाँ हम भी, आँसूं से सने तराने हैं। गीतों में पीड़ भरी सुन ले, अंखियाँ रोवें ना माने हैं। जिसे संजोया चाहत से था, नहीं पा सका यह मन रोया। बिगती यादें लेकर चलता, यह मनुआ सुपनों में खोया।

चल चल कर हम गिरे यहाँ पर, उठते उठते भी टूटे हम। किसे कहे हम अपनी पीड़ा, चलते हैं बस लेकर ही गम। जिसको चाहा वह नहीं मिला, ज्ञान कहे नाही कर तू गम। पिसता जाऊँ मैं तो हरपल, कैसे उबरूँ अब है न दम।

तेरी आँखों में मैं झाँकू, दर्द तुम्हारा पहचानूँ। बने विवश हम देख रहे सब, कैसे इस जीवन को जानूँ। अभिमान यहाँ क्या दुनिया में, सब देख रहा मैं तो हूँ दंग। मिलजुल कर यह कट जाये मग, चाहूँ हो जाये तेरा संग।

जब साथ हमारा छोड़ दिया, हम बहते जहाँ डगर दीखे। तुमसे न कोई शिकायत है, यहाँ भाग्य है जो कुछ दीखे। प्यारी बातों को भुला रहे, दीखे ना तेरा साथ रहे। पागल मनुआ फिर भी रोये, जाने ना कोई साथ रहे।

अंखियों से नीर गिरें ऐसे, तपती धारती पर मेघ गिरे। प्यासी धारती की प्यास बुझे, ना बुझे पता हम कहाँ गिरें। गिरे नीर ना तुझ आँखो से, देख देख हम खुश हो लेंगे। योग्य बन सके न तेरे हम, पीड़ा यह दिल में पी लेंगे।

लहरें बहती बह जाती है, पर अवश न कुछ कर पाती है। सागर ही नाच रहा जग में, संदेश हमें दे जाती है। मैं भूल गया निज चाहत में, तुमको मिलने को दिल तरसा। सब चाहत का सागर मालिक, तू प्रीति बढ़ा मन न तरसा।

2ण

किस सुख को खोज रहे हैं हम, कुछ भी है ना अपने बस में। कुछ पल मिलना फिर खो जाना, कैसा संगम है इस जग में। चल रहे यहाँ ना पता कहाँ, मंजिल हमको ले जायेगी। सुख दुख की यहाँ जला होली, कैसे यह नाच नचायेगी।

आँसू गिरते इन नयनों से, अपनी वह व्यथा सुनाते हैं। कौन जगत का सूत्र धार है, ना यह रहस्य पा पाते है। क्या पकड़ेगे हम इस जग में, सब ही छूटा सा जाता है। औरों की क्या करें बात, तन साथ छोड़ता जाता है।

मत पकड़ यहाँ तू खेल खेल, सागर ही तेरा स्वामी है। लहर उठाता और गिराता, उसकी ही यह सब क्रीड़ा है। ले जाये लहर तू बहे जा, न साथ तेरा सागर छोड़े। सुर तोड़ न इस सागर से तू, काहे सुख से तू मुँह मोड़े।

3ण

जीवन के तू खेल खेल ले, अपने आँसू स्वयं पोछ ले। नहीं मनाने आये कोई, किसकी आस करे तू पगले।

दो दिन का है जग में मेला, भरी भीड़ में हुआ अकेला। पकड़ोगे क्या तुम इस जग में, आता है पीछे से रेला।

नौका जब हिचकोले खाये, साहस से तू चलता जाये। नहीं लजाना इस जीवन को, चाहें सागर यह पी जाये।

जीवन है चलना ही होगा, सृजन नया करना ही होगा। छिपी इसी में शान्ति यहाँ है, प्यार तुझे अपनाना होगा।

इस दुनिया की भाग दौड़ में, आपाधापी मची हुई है। सोच समझ मत खोना अपनी, ढलता सूरज सांझ हुई है।

AANKHEN NAAM HAIN……

जीवन के हैं रंग अनेकों, कभी सुबह है कभी शाम है। सुख दुख की छाया के नीचे, पलता यह सारा जीवन है।

4ण

निज का बोझ न हमसे उठता, कैसे तेरा बोझ उठायें? बहते तेरे नीर देख कर, बस न चले यह जी जल जाये। एक कहानी भूली बनकर, याद तुम्हे यहाँ आयेगी। साथ बनाया था जीवन का, ना पता निशा डस जायेगी।

प्यार पुकारे पलकें भीगी, बने नहीं हम तेरे सहारे। तुझे खेलना खेल यहाँ तू, सागर ही बस लहर उबारे। जीवन का संयोग यह कैसा, विछुड़ यहाँ फिर मिल न पावें। चुभती रहे चुभन इस हिय में, अँखियाँ हरपल नीर बहावें।

दर्द यहाँ कितना बिखरा है, चाहें तू मुस्कान खिलावे। दैव हाय हमसे क्यों रूठा, तू ना हमसे नेह बढ़ावे। चाहत कोई छोड़ सके ना, सबकी समझ यहाँ है अपनी। अन्त नहीं है इन लहरों का, रूके नहीं आंखो का पानी।

5ण

पत्ते हवा में उड़ रहे है, न कोई इनका ठिकाना। पीले हृदय में दर्द को तू, बीत जायेगा जमाना। यह कुछ समय का है बसेरा, सुपन का है यहाँ घेरा। क्यों टूटती निद्रा नहीं है, रोते आँसू ने घेरा।

आँसू गिरे जो इन नयन से, कर दे समर्पित तू यहाँ। चलता ही जा सभी भूलकर, दो दिनों का मेला यहाँ। पीना चुभन शिकवा न करना, हंस बोल ले सबसे यहाँ। लहरे हमें ले जाये कहाँ, ना जानते मंजिल कहाँ?

6ण

एक गम हो तो कहें हम, गम अनेकों है यहाँ। डूबता ही जा रहा हूँ, ना निशा होगा यहाँ। चन्दा पुकारे चकोरी, हाय मिल पाती कहाँ? पुकारता तुझे रहा मैं, मिल नहीं पाते यहाँ। याद आकर चुभन देती, खेल कुछ पलका यहाँ। उस पार जाती रो नही, देख नौका को यहाँ।

डर न तू तूफान से मन, चाहता जीव चलना। मग में बाधाा आयेंगी, धौर्य से पार करना। चलते चलते जायें मिट, न गम करना है हमें। जब मिलेगा वह नियन्ता, दिल दिखायेंगे गमें। दिल के गमों को भुलाकर, तुम यहाँ चलते चलो। दुख की गंगा से गुजरकर, उस नियन्ता से मिलो।

7ण

लुटते यहाँ आँख के मोती, कौन संभाले दुनिया में? बसी हुई जो दिल में पीड़ा, कौन हरेगा दुनिया में? सभी यहाँ भागे जाते हैं, भुला अपनी करूणा को। लिये लक्ष्य क्या जग में फिरते, दर्द दे रहे औरों को।

यह पल दो पल का जीवन भी, कितने खेल खिलाये है। नहीं उदर भरता है इसका, मन सुपना ना टूटे है। मिलते हैं यहाँ विछुड़ जाते, जली सदा ही है होली। पी सके किसी के ना हम गम, फिर भी अँखियाँ है रो ली।

चलते ही चले जाये यहाँ, यादें लिये उसी की बस। जो मिला ठिकाना वह अपना, बने लहर सागर में बस। लहरों पर लहरें आती है, कभी नहीं गिनती होती। ना पोंछे अपने तू आँसू, कौन सुनेगा फिर विनती।

8ण

जो कहते थे साथ रहेंगे, नहीं कभी तुझको छोड़ेगे। आया एक हवा का झोंका, तरस गये ना कभी मिलेंगे। स्नान किया आंसू से मैंने, कितना तुमको प्यार किया है। क्रूर काल भी हुआ बेरहम, इस दिल से खिलवाड़ किया है।

सूनी आँखें हुई हमारी, भटक रही मैं दर दर मारी। अपने आँसू पोंछ सकूं ना, जग भी देता मुझको गारी। लाल रो रहे प्यार रो रहा, यह सारा संसार सो रहा। हुए अवश कित जायेंगे हम, जीया मेरा हाय रो रहा।

चली एक गठरी को लेकर, कित ना जाने मैं जाऊँगी। ऐसी हुई अभागिन मैं तो, आंसू यह किसे दिखाऊँगी। कैसे मैं दिल को समझाऊँ, रूठ गये न मना पाऊँ। प्रेम दीप बुझ गया हमारा, उस पर निज की बली चढ़ाऊँ।

9ण

जी रहे नहीं निज का जीवन, ऐसा जीवन भी क्या जीवन। साधू हम कहें किसे जग में, जो जीता है निज का जीवन। माना है बहुत विवशताएँ, उनमें हम उलझ उलझ जायें। जीवन को हँस हम सुलझायें, चाहे प्रयास में खो जायें।

सुख दुख की लिये पहेली को, हम घूम रहे हैं दुनिया में। पर खतम नहीं होती गिनती, हम टीस लिये फिरते मग में। दो दिन का जीवन समझ यहाँ, सुख दुख बह जाना जान यहाँ। तू जोड़ उसी से अपने स्वर, जो छोड़ तुझे छिप गया कहाँ।

बुझते हर पल हम जाते है, नहीं दर्द दिखला पाते है। जग का हारा हुआ मुसाफिर, बस नयन तुझे ही तकते है। पथ नहीं दीखता लगी घुटन, आँसू भी है साथ छोड़ता। दिशा हीन हम भटक रहे है, कृपा करो मेरे देवता।

सुर मिला उसी से मन अपना, जीवन तेरा हो जायेगा। जो लहर जलधा से दूर हुई, बस एक वही रह जायेगा। जी रहे उसी का है जीवन, मत गर्व यहाँ कर हम दो पल। साधू बन मन तू समझाले, अब है ना तू होगा फिर कल।

10ण

सबकी अपनी यहाँ प्रतीक्षा, आने की फिर जाने की है। सूखा तूल लखे धारती को, खिलता अपने रहने की है। किसको गीत सुनाये अपने, सबके अपने अपने सुपने। गायें मिले गीत तेरे संग, इस जीवन को रंग ले अपने।

बहते आँसू सूख न पाये, किन जन्मों की कथा सुनायें। यादों को ले भये बाबरे, निकल सकूँ ना मग को पायें। कर कर यहाँ प्रतीक्षा हारे, मिले नहीं तुम मुझको प्यारे। फिर भी करते हाय प्रतीक्षा, इसी नियति के आगे हारे।

कुछ पल के मेहवां बने हम, कहाँ जाने न खो जायेंगे। तेरे गीतों को सुनने हम, क्या कभी यहाँ फिर आयेगे। तेरी डाली बीता जीवन, फिर भी सूखा जाता तन मन। कहाँ हवा ले जाये हमको, कब मिले हमे शायद साजन।

11ण

मेरे नाविक तू ले चल अब, यहाँ नहीं है जी लगता। तेरी सुन्दर सी दुनिया में, रूदन नहीं रोके रूकता। सुन्दर सुपन सजाये मैंने, उड़ राख हुए सब बन कर। कैसे कह मैं हंसूँ यहाँ पर, थके कदम हम दो चलकर।

जलती यहाँ प्यार की होली, नहीं नियति मुंह से बोली। लुटे यहाँ अरमान हमारे, अंखियाँ जी भर भर रोली। ले ले जख्म यहाँ से हारे, जख्मी हो गिरता जाता। किसे सुनायें अपनी पीड़ा, तोड़ रहे सब ही नाता।

कोई लोरी हमे सुना तू, डूब उसी में जाये हम। समझ दर्द को मेरे नाविक, टूटे थके यहाँ पर हम। जी भर रोया हूँ मैं नाविक, नहीं बनो तुम अब गाफिल। इन अंखियों को तू निहार ले, गिरा रही आंसू हरपल।

12ण

चलते चलें जग में, गिर जाये वहीं मंजिल। पाना यहाँ खोना, तू पार कर सब मुश्किल। आस का दीप जला, साहस को कर ना विदा। मत रो बिता जीवन, कर प्यार अमर है सदा।

तूफान भी घेरे, अपने भी तुझे छोड़ें। चलता चला जा तू, मुख चाहें जगत मोड़े। जिसको यहाँ माने, वह हो रहे बेगाने। घायल दिल न समझे, यह रोये नहीं माने।

डर न तू खे नैया, जीवन में यही सुन्दर। चाहे जिया जाये, बढ़ता जा बन के निडर। तू कूल को पकड़े, नहीं हाथ यहाँ आते। बह जा यहीं जीवन, दुख मान ना गम पीते।

13ण

मैं तुमसे कुछ भी ना चाहूँ, चाहें कितने ही दुख बरसे। सबके अपने अपने सुपने, ना देख नयन मेरे वरसे। सुर मिला सके ना तुम मुझसे, फिर भी क्यों मुझ पर बरसे। चाहत मेरी भी कुछ तो है, नयना ेरे तो हम तरसे।

तू भूल गया है साथ छोड़, क्या मेरा तेरा नाता है? इतनी पतली डोरी निकली, सोंचा जन्मों का नाता है। दर्द दिल में हंसी होठों पर, खोते जाते पल जीवन के। खुश रहो सदा ही जीवन में, सुर मेरे तुम इस जीवन के।

चल चल कर यहाँ गिरे टूटे, तूने भी हमें कहा झूठे। पहचाना ना मजबूरी को, तुम ंसे वासना में रूठे। टूटी ूटी कुछ खुशियों से, मन अपना हम बहलाते है। तुमको न मिले कभी पीड़ा, अनजान डगर पर चलते है।

तुम साथ हमारा दो ना दो, हरपल हमको तो चलना है। चलते चलते निज को खोकर, दो गज जमीन में सोना है।

14ण

पिजड़े का पंछी उड़ न सके, कटे परों को लख अकुलावे। जीना चाहे जैसा जीवन, हाय विवशता आड़े आवे। साहस करे नहीं उड़ पावे, नयनों से बस आंसू आवे। नियति खिलाती खेल यहाँ पर, राजी उससे ना हो पावे।

ऐसा भी क्या खेल चल रहा, कोई हंसे कोई रो रहा। ंसा हुआ वह किन हाथों में, बना विवश दुख उसे हो रहा। कितने दिवस यहाँ पर गुजरे, बंधान मुक्त नहीं हो पाया। कितनी ही नजरों में झांका, पीड़ नहीं कोई लख पाया।

निज के जाते टूट सहारे, दाना दे दानी बन जाते। पंछी देखे टुकर टुकर पर, समझ पीड़ उसकी न पाते। जीवन की है यही कहानी, यहाँ करें सब ही मनमानी। जितना कर सकता करता जा, पार लगाये वही भवानी।

15ण

गीतों में है रूदन छिपा क्यों, गये भूल हम तुमको क्यों? कितना रोये नजरें ेरी, बैचेन हुए जीते हैं क्यो? चले मगर चल कर ना पहुँचे, जीवन है एक पहेली। जैसे लहर बहे सागर में, क्या जान सकी किधार चली?

नियति लहर की बहे जलधा में, कितने ही दुख सुख आयें। यदि हो जाये रजा जलधा से, उसमें सुख पा लहराये। जोड़ जलधा से नाता पगली, नहीं यहाँ तेरी चलती। जितना मैं को करें विसर्जित, होली कर्मों की जलती।

सुख दुख का सब खेल जलधा का, पीड़ यहाँ मैने ओड़ी। सदियों से मैं हाय रो रही, जानूं ना गुत्थी तोड़ी। लहर मिटे जब जलधा रहे तब, नहीं समर्पण कर पाती। व्याकुल हो कर भूख प्यास से, आँसू अपने ढरकाती।

ना भूल जलधा को बनी विवश, यह ही तेरा है स्वामी। संग तेरे यह समझ सुखी हो, पकड़ इसे सबका स्वामी।

16ण

बन्धान यह कर्मों के लेकर, इसे ढो रहा हाय निरन्तर। कभी मिटेगी ईश्वर भटकन, पूछ रहा हूँ तुमसे ईश्वर। बनी नियति क्या हाय हमारी, पड़े शून्य को हम लखते है। चलते चलते गिर जाते हैं, आंसू भर फिर उठ जाते हैं।

यह अनजान डगर मेरी है, नहीं दीखता कोई किनारा। इस दिल को समझाऊँ कैसे, बहती है आंसू की धारा। बहते नीर न कोई देखे, घुटती शाम यहाँ हम देखें। यह दुनिया किस लिये बनाई, जलती होली सुख की देखें।

दुनिया है यह रंग बदलती, किसको हम पीड़ा दिखलायें। बन कर बस निज के दीपक ही, ज्ञान यहाँ लेकर मिट जाये। अपनी अपनी सोंच यहाँ पर, मान नही कुछ भी दुख प्यारे। बस बह बहना तुमको होगा, ज्ञान वही ज0ो पार उतारे।

जीवन दरिया पार हो रहा, सोंच सोचकर दुखी हो रहा। पाया दो पल का यह जीवन, शाश्वत भूल और रो रहा। निज की करो जरूरत पूरी, सबकी हो जाती है ढेरी। इसी बात की हृदयगंम कर, बिसरा मत ना होगी केरी।

धार्म निरन्तर जप जाना है, सदा नहीं बस यह सुपना है। जीते जी तू नयन लड़ा ले, ना फिर रोते ही जाना है।

17ण

बुरा नहीं तू मान जगत में, यह मेला बस दो दिन का है। बहा जा रहा सब दुनिया में,लख बहने में ही दर्शन है। किसको पकड़ें किसको छोड़े, तार यहाँ सब उलझे मेरे। साथ छोड़ता जाता यह तन, सूख न पाते आँसू मेरे।

सुपने से सब खेल रचाये, उसमें यहाँ खूब भरमाये। दो पल की खुशियों की खातिर, नयना हरदम नीर बहाये। सदा नचाती रही भूख है, हम सुख पाने को तरस गये। होली जलती अरमानों की, सावन से नैना बरस गये।

लगा यहाँ पर तू दिल अपना, प्यार बाटने का रस ले ले। दो पल यह बीते जाते हैं, गम ना कर इस जग को लख ले। दबे हुए सब निज पीड़ा से, कर न शिकायत पगले जग से। तू गाता जा मिला स्वरों को, हृदय प्रेम को हरदम तरसे।

18ण

चलते रहे नहीं पहुंचे हम, कैसा यह जीवन भरमाया। इस तन का श्रृंगार किया नित, नहीं यहाँ फिर भी रूक पाया। अनगिनत मुसीबत मग में आई, जूझते रहे सुबह न आई। अंधियारा ना पार कर सके, डूब रहा मैं तो हरजाई।

ख्वाब न पूरे हुए हमारे, खो इसमे सब दिवस गुजारे। हरि से प्रीति नहीं कर पाये, अन्त हाय अब कौन उबारे। आंसू आये रो रो हारे, पहुँचे नही शान्ति के द्वारे। इच्छाओं में रहे भटकते, तुझे भूल सुख सभी विसारे।

कीचड़ में है जन्म हो रहा, नभ में यह है ꠰लित हो रहा। इनके बीच यहाँ पर पगले, देखो तो वह कौन रो रहा। मैं को यहाँ विसर्जित कर दे, सागर में बन लहर नाच ले। तेरे हाथ नहीं कुछ पगले, जीवन के भ्रम सभी मिटा ले।

तेरी मंजिल या तू मंजिल, दोनो का तू ꠰र्क जान ले। छिपा बीज में पूर्व नियोजित, अन्य हो सके नहीं जान ले। तुझे चलाता ही प्रभु जग में, वही हंसाता वही रूलाता। गिर जाओ उसके चरणों में, सबका वह ही भाग्य विधााता।

19ण

चुपचाप चले चल नहीं उलझ, पैमाने हैं सबके अपने। चुप कौन सुनेगा तुझे यहाँ, अपने ले कर चलते सुपने। मत उलझ जाल में औरों के, क्या श्रेष्ठ पूछ अपने मन से। आटा कांटे में लगा हुआ, मत ꠰ंसना मीठी बातों से।

चलता जा चलना है जीवन, रूक मत बाकी थोड़े से पल। जग की बगिया में ꠰ूल खिला, सिन्चित कर दे नयनो का जल। पीड़ा का सागर उबल रहा, जीवन उसमें सिलग रहा। मत भूल डगर दे प्रेम यहाँ, सब कोई इसको तरस रहा।

तू दर्द छिपा कर सीने में, मत अपने दुख रो सुन सबके। कुछ पीड़ मिटे तुझ संग साथ, वरदान समझ यह ईश्वर के। गाता जा तू मधुर स्वरों में, जो रोते उनको गले लगा। बहती जाती जीवन नदिया, क्या शिकवा बस तू बहता जा।

20ण

जीवन यहाँ बहुत अद्‌भुत है, किसको कहना किसको सुनना। ढपली बजा बजा कर अपनी, इस दुनिया में है खो जाना। मैं मैं का हम राग अलापें, अपने को हम बड़ा बतावें। एक चोट से जख्मी होते, अंखियां देखे कौन उठावें?

उपदेश सुन रहे सब सारे, क्यों ना आये काम हमारे। लगा ज्ञान के हम तो हेाली, सदा समझ से रहे किनारे। नहीं पहचाने हिय किसी का, बड़ बड़ बोल बड़ा बन जावें। अपनी लघुता को विसार कर, जग में हम यों ही भरमावे।

बोल यहाँ मीठे क्यों भूलें, जिव्हा से है विष क्यों ꠰ूटे? अकड़ दिखावे किसको पागल, क्यों तेरा अभिमान न टूटे। जाने तू सब यहाँ बह रहा, तर्क करे ठगता है सबको। लिये जंबा पर हिय की कालिख, क्षुद्र बनाता तू क्यों सबको।

ज्ञान वही जो तुझे झुकाये, मीठे ꠰ल सब यह जग खाये। ईश्वर की है सृष्टि अनूठी, क्यों निज को तू खुदा बताये।

21ण

तुमको निहारते हम रहें, कोई हमें न गम रहे। बस आरजू तू ही मेरी, हम विलग न हो दिल कहे। तुमको जतन से पाया है, मत जाओ डर है हमें। अश्रु बहाते नयन मेरे, दिल में मेरे तुम रमें।

जग की कठिन राहें है पर, प्यार से कटता ꠰र। डुबकी लगा ले गंग में ꠰िर, जाये हम हो बेखबर। तुम ही हो मेरे सभी कुछ, मुझको कभी न छोड़ना। इस नदी में चाह रहा हूँ, तुझ संग ही मैं तैरना।

यहाँ अश्रु बनते ꠰ूल जब, प्यार का जब संग पाते। तेरे बिन वीरान सब कुछ, नीर को न रोक पाते। प्यार से ही जगत चलता, सब कुछ इस में ꠰ल रहा। टूट जाता जब यह धाागा, ꠰िर नहीं कुछ यहाँ रहा।

22ण

AANKHEN NAAM HAIN……

बोल मत बस चुप रहो तुम, सभी अपनी सी कहें। चुपचाप गुजर जा राह पर, मरीचिका को न गहे। डालते निज जाल अपना, चून में कांटा छिपा। समझ है तो बच निकल जा, किसलिये इतना चिपा।

अपने भी बने पराये, सब करे यह वासना। सब बदल जाता यहाँ पर, दु:ख मनाये कितना। मत पकड़ बहती लहर को, बन लहर बह जलधा में। नहीं पकड़ वह आयेगी, बह रही निज सपन में।

कुछ पलों का मेल है यह, पास है सब दूर हैं। साथ हंस गा कर रूर तू, बहता जा न छोर है। सब प्रीति है झूठी यहाँ, तू उसी से दिल लगा। कुछ पलों का खेल बाकी, भूल जा जग की दगा।

23ण

तेरी अन्टी में नोट छिपे, जय रघुनन्दन जय सियाराम। उसमें मेरी आँख लगी है, खोल दे अन्टी मेरे राम। इन नोंटो के चक्कर में पड़, तेरी हर दिन पूजा करते। मीठे मीठे सुपने लेते, देख देख हम इनको जीते।

नोटों की इस चकाचौंधा में, रिश्ते नाते सब छिप जाते। अपना उल्लू सीधाा करते, आदर्शो की बली चढ़ाते। नोटों की खातिर भटक रहे, चमक दिखा सबको ललचाऊँ। इसमें राम बनाना माहिर, उल्टा सीधाा सब कर पाऊँ।

तेरे घर आयेगे हम कब, ुरसत नहीं गिने यह जब तक। नोटों की गर्मी को लेकर, जग को पार करेगे जब तब। पार हुई सब जीवन लीला, क्या उपजी अब हिय में पीड़ा। नोटों का अम्बार लगा है, देखें अंखियाँ क्या है क्रीड़ा?

राम जपा ना निज में डूबा, देख देख नोटों को ूला। लोक कहें चिपका नोटों से, कैसी करमगति हरी भूला। चार जने मिल उसे उठायें, खर्चे से भी जिया चुराये। सारे जग की ममता झूठी, जीत वही हरि हिय सजाये।

24ण

जिन्दगी क्या गीत गाती, समझ तू मत रो यहाँ। सुर मिला उस ईश से, बह सहज जग में यहाँ। जब लगे न दिल यहाँ पर, याद कर उस ईश को। कोई पोछेगा न आंसू, वह सुने ारियाद को।

कुछ पलों का मेल है रि, न पता कहाँ जी गया। देखते ही रह गये हम, ूल खिल मुरझा गया। छोड़ रखता बोझ किसका, टूटता है दिल गमें। सुख दुख का है यह मेला, अकेला जाना हमें।

गीत कोयल जब सुनाती, भीग जाती जब धारा। उस कृपा से दुख सिमटते, हृदय खुशियों से भरा। मिट रहा अज्ञात में सब, खेल हरपल चल रहा। ंस यहाँ अज्ञान में है, नीर नयनों से बहा।

चले उसकी ही रजा सब, नेह कर उससे यहाँ। नियति का तू तो पथिक है, कर सुरति बह ले यहाँ।

25ण

दो दिन का है रैन बसेरा, मनुआ रि चिन्तित तू क्यों है? गा ले हँस ले साथ निभाले, पता ना रि कहाँ जाना है? आँखो से बरसात बरसती, किसको तेरी आँखे तकती। घूम रहे निज इच्छाओं में, जले शमा शबनम तो मिटती।

मिटने का ले स्वाद अनूठा, खो कर ही सब कुछ पाना है। दिल में उसकी याद जगाये, हमें पतंगा बन जाना है। करता जग मतलब की बातें, काहे उसमें निज को ांसे। बच सके तो बचा ले दामन, लय तुझको उसमें होना है।

26ण

शाश्वत क्या है यहाँ पर जो, मिटाये मिट नहीं सकता। सदा हम रहते घिरे उससे, समझ में वह नहीं आता। यहाँ पर हर बीज है आतुर, मिल जाये निज की मंजिल। सींचे कोई पाले कोई, हिया सदा रहता चंचल।

किसको खोजे आंख यहाँ पर, घिरी हुई जिससे हरदम। मिट जाते है कितने ही पर, चले कहानी यह हरदम। जो अन्तस में बाहर भी है, चले खेल यह जी भटका। आंखे टिके नहीं उस पर, टिके बोझ हो कुछ हलका।

वह ही सर्जक और संहारक, खेल नये नित वह रचता। दीपक जले ज्ञान का जब भी, देखे हिय में वह बसता। उसको हम स्वीकार करे, निहारें शून्य में आंखें। यहाँ बस शून्य ही सब कुछ, समाधि शून्य ही निरखे।

27ण

गम की आंधी से नहीं डरो, किरन देखो नई आती। गुजर जायेंगे सभी यह पल, यहाँ हर रात है ढलती। अंधेरे को चीर कर सूरज, तुझे पथ को दिखायेगा। उसी प्रभु को तू कर ले याद, दुखों को वह मिटायेगा।

जब झड़ी लगती आंसुओं की, भंवर में नाव है ंसती। नहीं विसराओ हरी को तुम, तेरे जीवन की हस्ती। वह ही सम्बल है सहारा, न बिसरा चल न पायेगा। तू बसा ले श्याम को मन में, तर सागर से जायेगा।

यहाँ अनजानी डगर तेरी, न कोई भी किनारा है। सतत बहना ही यहाँ होगा, समझ उसका सहारा है। उसकी रजा में चले ही चल, जो बीती उसे भूल जा। किसी को भी नहीं तुम पकड़ो, बह सागर में बस बह जा।

28ण

दो पल यहाँ पर खेल ले तू, आँसू बहें वह पोंछ ले। पीड़ा उबलती है यहाँ पर, तू धौर्य से ही झेल ले। सभी स्वार्थ के नाते यहाँ, पल में बदलते हैं यहाँ। इस जहाँ में देखते हम, सब टूट जाते दिल यहाँ।

कुछ ख्वाब मैने भी संजोये, रंग को भरता रहा। एक हवा का आया झौका, सारा जहाँ मेरा बहा। तू गम नहीं कर, तू ख्वाब जी ले, टूटते यह धौर्य धार ले। यहाँ बह रही तू देख गंगा, न हाथ आये जान बह ले।

कोई यहाँ पर कब विछुड़ता, कोई भी है न जानता। करता हठ पागल यह मनुआ, उड़ते न पत्ते देखता। लहर उठती फिर है ढलती, किसको पकड़ता है यहाँ? दो दिनो का है यह मेला, धौर्य को नहीं तज यहाँ।

कैसी हुई माया यहाँ पर, डूबे सभी इसमें हुए। नित नये करते है सृजन हम, क्यों तृप्त फिर भी ना हुए। आंसू सदा गिरते रहेंगे, ूल भी खिलते रहेंगे। धारती का ;ण जो है बाकी, प्यार दे पूरा करेंगे।

29ण

थक गये यहाँ चलते चलते, ना पता कहाँ जायेंगे। मेरा यहाँ है प्यार रोता, ना तुम्हें तड़ायेंगे। एक हवा का झोंका आया, दिल न उसमें संभल पाया। आंसू बहाये इन नयन ने, क्या तेरी प्रभु जी माया।

मिल यहाँ सुपने संजोते, विछुड़ते फिर खूब रोते। यह कंटको से पूर्ण है पथ, भाग्य से है सुपन खिलते। फिरता रहा हूँ ढूंढता मैं, किस जहाँ में खो गये हो। पलट कर भी तुम न देखा, किस सजा को दे रहे हो।

कंटकों से मैं घिर गया हूँ, तुम सदा ही दूर रहना। तुझे सताये न शूल कोई, कर रहे यह विनय नयना। बोझिल हुई है जिन्दगी यह, दबा इसमे जा रहा हूँ। तेरी यादों को संजोये, भोर का तारा हुआ हूँ।

30ण

जीवन नदिया बही जा रही, कितने सुपनों को उर में ले। लहरें उसकी कांप रही है, अनजानी आशंका को ले। आंखों में पानी भरा हृदय, नित नित घटती नई कहानी। चलती जाती गाती जाती, देख रही अनजान कहानी।

उठा रही वह अपनी धुन को, प्यार गीत वह सुना रही है। सुने नहीं यदि उसको कोई, फिर भी वह बहती जाती है। प्यास बुझाऊँ मैं इस जग की, खेतों में भी मैं लहराऊँ। सिंचित कर के इस धरती को, तपन बढ़ी मैं उसे मिटाऊँ।

जप तप धयान नहीं कुछ जानूं, बही जा रही बहना जानूं। मग में जो आती बाधायें, गति जीवन को देना जानूं। आगे सागर लहराता है, मिलन सभी का हो जाना है। बंधी हुई हूँ नियति डोर से, घबराता है।

31ण

मेरे सुपने सभी लुट गये, दिल से चाहा तुमको हमने। गया भूल तू क्यों हरजाई, प्रीति लगाई तुमसे हमने। निकला ऐसा जान न पाई, तुझे दिया दिल आस लगाई। बना न खेवट डुबा चला तू, आंसू ने है झड़ी लगाई।

संग ले चले हम आशायें, पता नहीं था यह खो जाये। ऐसा दर्द जगाया तूने, सके भूल ना यह जिय जाये। माना कुछ पल मेल यहाँ है, क्यों तू भूला दर्द दिया है। आंखों के आंसू ना देखे, ऐसा फिर क्यौं गुनाह किया है।

धारती रोई नभ भी रोया, किन सुपनों में पर तू खोया। नींद गई प्रिय मेरी तुम बिन, जीवन का सब उत्सव खोया। चहुँ दिश फूल खिले बगिया में, सुर समीर तेरे ही गाये। तुझे मिले सुख हमें भूल कर, चाह नहीं सुपनों में आये।

32ण

कौन अच्छा है बुरा है, सोंच पागल रो रहा है। देख ले तू इस समय को, भागता यह जा रहा है। बह रही हरपल यह गंगा, ना मिलन अक्षुण कभी है। मन को मैला करो न तुम, कुछ समय का खेल यह है।

वासना में बह रहे सब, ईश से तू दिल लगाना। शान्ति सागर तो वही है, भूल उसको तुम न जाना। मिल सभी से प्यार कर ले, जानो फिर हमको जाना। यही है तप जान ले बस, बीत जायेगा फ़साना।

फेंकते पासे सभी हैं, चाल अपनी चल रहे हैं। देख ले सतरंगी दुनिया, स्वप्न में हम खो रहे है। क्या शिकायत चल संभलकर, ईश को दिल में बसाले। नयन से आंसू गिरें जो, फूल उनसे तू खिला ले।

33ण

आँखें नम है खामोशी, जलन बुझती नहीं दिल की। तुझे खोजें कहाँ पर हम, सुन लेते मेरे दिल की। जमाने से शिकायत क्या, कहाँ किस लोक में खोई। प्रतीक्षा कर रहा किसकी, गमें यह आँख है रोई।

गमें मुस्कान तू दे दे, जमाने से पता पूछे। बहे दरिया गमों का है, न अपने अश्रु को पोंछे। नहीं रूकना चले चल तू, खिलें है फूल कांटो में। मिले वह अपनी मंजिल से, न रूकते जो कभी पथ में।

यहाँ हम देखते सुपने, जब भी टूटते रोये। जलन जाती नहीं हिय की, नशे में हम यहाँ खोये। दुखों को ना मना पागल, यहाँ काँटे चुभन देते। निभा दे भाग्य के लेखे, कुछ पल है नहीं रोते।

बन कर पुष्प जग हर्षा, जग में रोती हैं आंखे। मिलेगा चैन इस दिल को, न ठुकरा झर रही आंखे।

34ण

जमाने से शिकायत क्या, न तुम आये मुहब्बत क्या? जिसे हैं खोजती आँखें, वही रूठा तो जीवन क्या? जीवन हो मेरे साथी, जरा तुम आंख को खोलो। कहाँ जायें मेरे हमदम, जहर इतना नहीं घोलो।

खिले थे ूल गुलशन में, सजाई तुमसे थी रातें। ढुलकते दिन पता न था, खतम होती थी न बातें। यह बेबस होती आंखे, गिराती नीर झर झर हैं। तरस तुम तो न खाओगे, मेरी हालत तो जर जर है।

अधार पर थी हंसी खिलती, मेरी दुनिया तो जन्नत थी। लगाई आग किसने यह, कभी न हमने सोची थी। चले थे साथ तेरे हम, जगत के भूल सारे गम। बसा सांसो में तू ही था, विलग होगे कभी न हम।

पिलाया जाम जो तूने, उसे अब तक नहीं भूले। बरसता है यहाँ सावन, नहीं पड़ते यहाँ झूले। तरसती है तुझे आंखे, मेरे कानों में कह दे। तुझे हम ना भुलायेगे, जग यह कितने ही दुख दे।

लुटा मेरा जहाँ सारा, नहीं तू देखने आया। डराता है हमें तो अब, हमारे साथ जो साया। कसक जो है कलेजे में, निकाली भी नहीं जाती। नयना मेरे रोते हैं, नहीं ट जाती क्यो छाती।

यह चन्दा घूमता नभ पर, दिलाता याद तेरी है। यहाँ पर हम भटकते है, आँखियाँ मेरी रोती है। न तुम आये राह देखूँ, घड़ी यह बीतती जाये। चाह है बस यही मेरी, न तुम पर दुख कभी आये।

35ण

मत उलझ व्यर्थ की बातों में, यह होता वह होता। खुली आंख से उसे देख ले, सच जो सम्मुख होता। बीज कोई मरूस्थल खिलता, कोई नदी किनारे। अपनी अपनी किस्मत है यह, रोकर काहे गुजारे।

चलता चल पैरों में ताकत, दया किसलिये मांगे। चलता रहा जगत में जो भी, भाग्य उसी के जागे। मत गुजारना तू रो रो कर, घड़ियां कुछ न देखे। ले ले प्यार लुटा दे जग को, आँखियां तुझको देखे।

दो दिन का है मेल यहाँ पर, फिर अनन्त मे खोना। करता जा कितना ही मातम, इस पथ सबको ही सोना। तुझे चाहिये एक घोंसला, ऐसे जी ले जीना। महलों का ले ख्वाब न दुख दे, औरो को तू रोना।

ूल खिला जग की बगिया में, जितना तू कर पाये। कुछ पल बाकी यहाँ खेल ले, न जाने कहाँ जाये। यहाँ विवशता रोती प्रतिपल, कितने खेल खिलाये। लहर बना तू बह सागर में, गम के पार तू जाये।

36ण

दर्द तुमने जो दिया है, वह भूल हम न पायेंगे। इतने बुरे तो हम न थे, तुमको क्या ना पायेगे। नीर आंखो ने बहाया, याद हमको बहुत आया। जलते जहाँ में हम रहे, डराता अब अपना साया।

प्यार की सौगन्धा हमको, ना कहेंगे कुछ कभी भी। याद आये भूल से हम, ेर लेना नयन तुम भी। जिन्दगी की दौड़ हमने, थी कभी संग संग लगाई। छोड कर मझधाार में, छिप गया ना शर्म आई।

सब खुशी तुमको मुबारक, अश्रु ही है प्यारे हमें। बीतता सब जा रहा है, हम डूबते हैं दिल गमें। सुनसान मेरी राह यह, नीर यह अखियाँ बहाये। इस कलेजे के रूदन को, कौन सुने दिल तो खोये।

37ण

कठिन शिलाओं का भेदन कर, अपने पथ पर जो बढ़ जाते। करे सामना मृत्यु खड़ी हो, वीर कभी भी ना घबराते। जिसने जाना जीवन क्या है, नहीं शोक संतप्त हुआ है। मृत्युवरण करते है हँस कर, रि भी होते अमर वही हैं।

इनकी हुंकारो को सुनकर, दुश्मन की ट्टती छाती है। ऐसे पूतों को पैदाकर, धारती मां भी हर्षाती है। कुछ भी इनको नहीं है मुश्किल, श्रम बूंदो से ूल उगाते। इस जग में इनके श्रम से ही, सब मिलकर आनन्द मनाते।

शान्ति दीप लेकर हाथों में, निर्बल का सम्बल बन जाते। एक हाथ में लिये कटारी, अन्यायी का दिल दहलाते। करूणा इनके हिय में बसती, नहीं वीरता कलुषित होती। पाकर ऐसे वीरों की ही, धान्य हुई यह पावन धारती।

पूछें यह रोती अखियों को, दुखते दिल को गले लगाये। जितना कर सकते कर देते, जाने जीवन रि ना आये।

38ण

खत लिखे उसको पढ़कर रोते हैं। खोजें तुमको दिशा न पाते हैं। मेरे हमदम क्यों मुझसे रूठ गये? जो दीप थे जलते क्यों बुझा गये?

मेरे सुपने सभी मिटा ही गये। अखियाँ रोती उठाती दर्द नये। तुम तो उड़ते कहाँ पर हम जाये? मीन बिन नीर ना कभी जी पाये।

पी पी रटे जिया नहीं भूले है। ऐसे दिल क्या हमें जो भूले है। तेरे पथ को हरदम निहारेंगे। जान भी जाये नहीं विसारेंगे।

39ण

कौन कैसा है यहाँ पर, मत उलझ संसार है यह। बचा दामन को यहाँ पर, निकल जीवन सार है यह। सब विवेकी हैं जगत में, भूल मत अज्ञान अपना। पोंछ बहते नीर को बस, जगत केवल एक सुपना।

सुख दिये सुख ही मिलेगा, दुख मिले विचलित न होना। ना कभी प्रतिशोधा में जल, धवंस को स्वीकार करना। नयन रोते पोंछ आंसू, प्यार को सब चाहते है। धवंस में पागल हुए जो, धवंस वह खुद भी हुए हैं।

प्रेम का दीपक जलाना, चोट अपनी भूल जाना। वैर को दिल से हटाकर, ूल इस जग में खिलाना। खेल दो दिन का यहाँ है, रि तो अंधोरी रात है। कौन जायेगा कहाँ पर, बस प्यार ही सौगात है।

40ण

वासना सबकी यहाँ पर, खेलती है खेल अपना। ना शिकायत कर किसी से, जान ले तू जगत सपना। याद कर तू रो रहा, न कभी जीवन में आये। स्वप्न में पर झलक दे कर, जियरा यह गुद्गुदाये।

जख्म दिल के भर न पाते, बीत जाती यह उमर है। कर प्रतीक्षा हम हारे, आंख पर हटती नहीं है। प्यार के बस बन पुजारी, प्यार को करते रहेंगे। इस जनम में ना मिले तो, फिर जनम ले कर मिलेगे।

विवश हैं हम इस जगत में, न पता कहाँ लहर जाये। बस गया तू इस हृदय में, मिटे हम पर तू न जाये। प्यार को दिल में संजोकर, हम भटकते फिर रहे है। बस तुही मेरा सहारा, तुम बिना हम तड़पते हैं।

41ण

ले चल अपने साथ मुझे तू, तुम बिन न रह पाऊँ। इस दुनिया में हुआ वियोगी, कैसे धीर धाराऊँ? नयना बरसे जिय न लागे, तुम बिना कहाँ जाऊँ? प्रीति तोड़ दी हुए अभागे, दर दर ठोकर खाऊँ।

जीते जी कुछ कर न सके हम, किसको नीर दिखाऊँ? तेरी गलियाँ संकरी इतनी, उसमें ना आ पाऊँ। प्यार हमारा जाने कैसा, बेबस बस दीवाने। बेदर्दी दुनिया के अन्दर, लगते हम अनजाने।

कौन दृष्टि से देखा तुमने, नहीं भूल हरजाई। चला न जाता हार चुका मैं, ले चल संग दुहाई। नीर गिरें कुछ कह न सकते, झूठी प्रीति दिखाई। देख रहे हम यहाँ गगन में, कब होगी सुनवाई।

42ण

जलना तो पड़ता ही है, दिये में तेल है जब तक। यह किसने आग लगाई, अटकी यह जान अभी तक। ना भूली जाती यादें, जो हमने साथ गुजारी। निर्मोही बने यहाँ तुम, अंखियाँ रोती बेचारी।

सुपने सब रंगीन हुए, संग साथ कसम थी खाई। पर हाय विधाता रूठा, छोड़ा ना देर लगाई। लग रहा नहीं दिल मेरा, आती यह भर भर अंखियाँ। तुम रूठ गये हो मुझसे, कैसे डालूं मैं बहियां?

संग साथ यहाँ पर होगा, ना सोंचा गमें जुदाई। तू भूल गया है हमको, कैसे भूले हरजाई? खेई जाती ना नौका, यह डूबेगी मझधाारा। तू हमें छोड़ कर भागा, सूखा जीवन रस सारा।

43ण

पागल हुआ क्यों जा रहा, सबकी आंख में झांक कर। हरि में नहीं क्यों डूबता, संकट कटे भव पार कर। जीवन दो दिन का मेला, जान ले मन कर न मैला। प्यार को उपजा हृदय में, जान ले तू है अकेला।

प्यार में जो क्षण गुजरते, प्रभु सदा उसी में बसते। जर्रे जर्रे में समाया, सब उसी को नमन करते। बह रही लहरें जलधा में, हम जलधा की लहर है बस। जान ले तू जिन्दगी में, कर सको करो यह मन खुश।

मौज सागर की यहाँ है, मन यहाँ पागल हुआ है। मिटती नहीं तृष्णा कभी, चलने का मौसम हुआ है। फिर रहे हैं भागते हम, नाम को हम लड़ रहे है। सब यहाँ पर रंक राजा, धूल में ही मिल रहे हैं।

44ण

तुम रूठ गये हम टूट गये, जीवन को बोझिल बना गये। मुस्काहट को ले होठों की, आंसू की झड़ियाँ लगा गये। तेरा है हरपल इन्तजार, काटे कटती है ना रैना। तुमसे मिलने हिय तरस रहा, सुल लें हम तेरे फिर बयना।

तुम छिपे कहाँ हम घायल हैं, मेरी रोती यह पायल है। इतना बेदर्दी बना हाय, तू कैसा मेरा साहिल है? याद तुम्हारी आती है जब, छाती यह धाक धाक करती है। आशाओं की जलती होली, पल पल हमें रूलाती है।

सारे भुला गया वायदे कर, मेरे दीपक को बुझा गया। बना हाय तू क्यों हरजाई, सब चैन यहां तू मिटा गया। तुम आओ या ना आओ प्रिय, सदा निहारेंगे पथ तेरा। जीवन के श्रृंगार तुम्हीं हो, सांसे कहती है तू मेरा।

45ण

आंख ेरी तूने, लुटी यह सारी दुनिया। तू ही था सहारा, रोती हमारी अंखियाँ। कर सकते नहीं हम, बस रोते ही रहे हम। कदम बढ़े नहीं यह, तुझे पा सके नहीं हम।

जलते हम रहे हैं, गम से हम रो रहे है। मुझे छोड़ तो गये, जीते हम किसलिये है? तुझे पुकारते हम, स्वर में मेरे नहीं दम। खोई है रोशनी, मिल जाओ मेरी कसम।

बंजर हुआ हूँ मैं, ना ूल अब हैं खिलते। प्यार तेरा चाहे, हम तो भटकते फिरते। लगता नहीं है दिल, नहीं साथ ले गया तू। आशादीप था जो, उसे क्यों बुझा गया तू।

अंधियारी रात है, जिया कांपता हमारा। सांस क्यों यह चलती, गया छोड़ हमें प्यारा।

46ण

पंछी उड़ते फिरें गगन में, अन्तहीन नभ को पाये। अपनी सीमाओं में बंधाते, सजता सावन शर्माये। नदिया धाारा बढ़े निरन्तर, गाती प्यास बुझाती वह। तृप्त यहाँ वह सबको करती, जाति पूछती कभी न वह।

नयनों से मोती गिरते है, किसने बीना है इनको? स्वार्थ में हम अन्धो होकर, भूल गये नश्वरता को। सुख दुख की इस पगडण्डी पर, करूणा क्यो हाय खो दी। छीन और की मुस्काहट को, न अहंकार को शूली दी।

इससे बढ़ कर झूठ नहीं है, यह दुखों का सृजन कर्ता। अपनों की छाती पर भी चढ़, हँस हँस यही लहू पीता। दो दिन का जीवन है प्यारे, जगा प्यार जी ले जग में। टूट रही है सारी कड़ियाँ, न अहंकार अपना जग में।

49ण

अपनी तो दुनिया लुटती, बन नहीं तू बेका। प्यार तुमसे ही किया है, नहीं हो हमसे खा। छोड़ कर मझधाार हमको, क्यों किनारा तू किया। नयन से आंसू न सूखे, जल रहा मेरा जिया।

फिर रहे हैं हम अकेले, मिटे सुपने रूपहले। क्यों सजा तुमने हमें दी, चाह थी संग खिलें। खा रहे ठोकर जगत में, न कोई है देखता। यह सफर कैसे कटेगा, अंखियाँ रोती न पता।

देवता माना तुझे ही, बसाया हिय में तुमे। तोड़ सारे बन्धानों को, क्यों रूलाया कह हमें। रहेंगे हम तो भटकते, जान यह जाती नहीं। तुम कभी हमको मिलोगे, आस यह मिटती नही।

50ਾ

मैं कहूँ कुछ भी न तुमको, जाऊँ काटों से गुजर। बीतती जाती हैं घड़ियाँ, जायेगा यह कट सफ़र। ख्वाब सभी ओझल हुए हैं, जख्मों को ले तड़ते। कहने की कुछ ना तमन्ना, आँसू ही अब चमकते।

डगमगाती मेरी नौका, पास यहाँ साहिल नहीं। क्या बनेगी अब ना जाने, कुछ भी हम जाने नहीं। आँख में आँसू हमारे, खोये अरमान सारे। स्वर मेरे सब खो गये है, कैसे तुमको पुकारें।

चाहतों के रंग हमारे, पल में सब ही मिट गये। बेखबर हो कर तू सोना, दुख भाग्य ने मुझे दिये। चल सके नहीं साथ दुख है, यहाँ नियति सबकी अलग है। साथ तेरे पल गुजारे, दिल में उसकी महक है।

51ਾ

आँसू को पीते हैं, हम गम में जीते है। ना दिशा मिली हमको, जख्मों ने घेरा है।

बसन्त मेरा पतझड़, भटके हम जीवन भर। ना किरण मिली हमको, अँधियारे का है घर।

टूटे सुपने सारे, आँसू निकले खारे। कैसे दिल समझाऊँ, जीवन में हम हारे।

ना समझ कहाँ जाये, जग मुझ पर है हंसता। इस पीड़ित दिल को ले, मैं कदम कदम गिरता।

मैं शमा हुई ऐसी, पूछे ना परवाना। मैं तड़ रही हरपल, ऐसा भी क्या जीना।

थक गई हाय अँखियाँ, बीते कितने सावन। क्यों भूल गये मुझको, तुम आन मिलो साजन।

52ਾ

अनजान पथ का हूँ मुसाफ़िर, ना जानता जाना कहाँ है? नयन में हैं आँसू हमारे, मेरा धाड़कता दिल गमें है। कितनी आशाओं को ले हम, चलते रहते जग के अन्दर। मेरा तड़ता दिल यहाँ है, आँख में है मेरे समुन्दर।

दो गीत गाते प्यार के हम, हँसते यहाँ हम मुस्कराते। पर यह नियति हमसे रूका है, ना अश्रु को हम रोक पाते। क्यों और कोई भी सुनेगा, तू रूठ हमसे ही गया है। तेरी बाट हरपल देखता, संग अश्रु के दिल बह गया है।

सुनसान रातें हैं डराती, क्यो तुम बिना ़टती न छाती। बन निष्ठुर तू ने ना देखा, जिन्दगी यहाँ ढलती जाती। याद का हम दीपक जलाये, इस जगत में हम फ़िर रहे हैं। नहीं टूटती आशा मेरी, तेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

53ਾ

खोजा बहुत न तुमको पाया, रोया बहुत न कुछ कह पाया। जलता रहा सदा जीवन में, पा न सका कोई भी छाया। क्रूर नियति ने आँखें मींची, लुटते मोती किसे दिखाऊँ? जली प्यार की होली मेरी, कैसे इस दिल को समझाऊँ?

खोंजे कहाँ बता हम तुमको, आंखो को ेरा है तुमने। दे कर दिल को दर्द खो गये, सिसकी मेरी सुनी न तुमने। यादों में तेरी खो जाता, फिर बसन्त दिल में लहराता। टूटी हाय वही फिर तन्द्रा, भर भर नीर नयन से आता।

बीती जाती जीवन घड़ियां, टूट रही हैं सारी कडियाँ। फिर भी तुझे भुला न पाते, विवश हुई यह मेरी अंखियाँ। नाम तुम्हारा बसा है दिल, नहीं मिटेगा मैं हूँ हारा। जीवन नदिया बही जा रही, पता नहीं है कहाँ किनारा?

54ण

चाहता हूँ आज रोना, मगर रो पाता नहीं। तुम बनोगे इतने निष्ठुर, जानता था मैं नहीं।

बेरहम इतने हुए क्यों, क्या हमारा दोष है? छोड़कर संसार में तुम, छिप गये ना होश है।

अकेले भटकते हैं हम, साथ में कोई नही। तुमको मिलेगी क्या खुशी, होंठ मुस्कहाट नहीं।

लौट कर तू पास आये, कैसे मनाये तुझे? प्यासे मन की प्रतीक्षा, नीर से सींचे तुझे।

इस जग में रोते रोते, खो न जाये हम यहाँ। कर जतन हँस विदा होवें, दर्द बहता है यहाँ।

55ण

दुर्भाग्य किया पीछा मेरा, मैं जहाँ चला पीछे आया। पापों को ना मैं जान सका, जीवन में मैं ना मुस्काया। संभल सके ना जीवन में हम, बस था असफलता का साया। समय गुजारा बस रो रोकर, ना क्रूर नियति खुश कर पाया।

जग हँसा कांपते पग को लख, क्यों रूठ गये हमसे सब सुख। ना दीप जला इस मन्दिर में, हर कदम सहे बस हमने दुख। अज्ञान तिमिर में ंसे हुए, क्यों रूठ गया हमसे यह रब? ऐसा हमने ना सोचा था, निष्ठुर इतना होगा यह रब।

पग कांप रहे जिय धाड़क रहा, ना पता कहाँ गिर जायेंगे? दो पल की खुशियां पा न सके, आंसू हमको नहलायेगे। माली तुम्हारे ूल हम, क्यों इतना निष्ठुर होता है। तू अश्रु हमारे लख लेना, क्यों मदहोशी में सोता है?

56ण

ना मिले दीदार तेरा, ना मिलेगा चैन दिल को। तड़फते ही हम रहेंगे, सूनी राहें है हम को। जिन्दगी यह जा रही है, संग गाते तेरे नगमा। नहीं भरोसा था हमको, टूटेंगे मेरे अरमा।

नयन में आंसू हमारे, याद तेरी हम लिये हैं। जाये न कब डूब नौका, प्रतीक्षा हम कर रहे है। प्यार भी खोया यहाँ पर, पा सके न तुमको है गम। जख्म जो दिल में लगे हैं, नहीं कभी वह होंगे कम।

दीपमाला मैं सजाता, ूल राहों में विछाता। सुपना अधूरा रह गया, नहीं समझ कुछ भी आता। याद हम तुमको रखेंगे, हम आखिरी इस सांस तक। टूट जायेगी डोर यह, नहीं तुम्हे होगी भनक।

57ण

कैसे अपना दिल दिखलाऊँ, कितना चाहा ना धयान तुझे। मैं रोता तो मुँह ेरे है, हँसता लगता मक्कार तुझे। यह रंग बदलती दुनिया है, उससे तू भी तो अलग नहीं। गम ना कर मन समझ यहाँ तू, अपना बेगाना यहाँ नही।

जो कहते थे हम तेरे हैं, साथ संग में वह खेले हैं। छोड़ गये वह हमको ऐसे, हुए झमेले हम उनको है। अनजान डगर तू चलता जा, क्या हुआ अकेला तू मत डर। कुछ क्षण का सब मेल यहाँ है, खो जाते सब ही इधार उधार।

मन समझा समझाकर हारे, यादों को ले गिनता तारे। ना रात कटेगी ऐसे मन, सब उसकी मर्जी है प्यारे।

58ण

वासना के रंग इतने, ना कभी पूरे हुए हैं। स्वप्न के इस जाल में तो, सदा हम उलझे हुए हैं। प्यार को दिल में बसाले, प्यार की भूखी दुनिया। वासना के रंग में धांस, मत कुचलो प्यारी दुनिया।

प्यार का पैगाम ले लो, अश्रु का तुम जाम पीलो। सुख छिपा इसमें बहुत है, पी सको अमृत यह पीलो। चहुँ ओर नजरें उठाओ, देख लो शाश्वत न कुछ भी। तोड़ना मत दिल किसी का, जाये यहाँ खो कभी भी।

करूणा हैं जिसके हिय में, वहीं है भगवान वसता। अश्रु ना मोती नयन के, प्यार से जब नीर गिरता। डगर है छोटी बहुत यह, कर रहे लम्बा सफर हैं। जाते भूल कुछ समय का, रैन वसेरा ना घर है।

59ण

कटती ही नहीं यह रैना, दिल ने चाहा था तुझे। सुनूँ कैसे तेरे बैना, तुम छोड़ गये हो मुझे। अँखियों में छवि तुम्हारी, तेरी हुई मैं चेरी। सुपनों में मेरे तुम्ही हो, तू कर नहीं अब देरी।

ठुकराओ नहीं तुम मुझको, जान चाहे तुम ले लो। आँख झरती हैं हर पल यह, किरपा कर तुम देख लो। जाते पल पल हैं हमारे, यादों को ले आते है। दिल लिया क्या तूने ऐसा, जो तुम्हें तड़ते है।

तुम बिना नहीं मुझे चैना, पथ देख रहे तेरा। शूल लग रहे हिय में मेरे, अन्जाम पता न मेरा। यहाँ प्रीति तोड़ कर भागा, टूटा कमजोर धागा। नहीं देखे नीर हमारे, दिल में है विरह जागा।

60ण

जलता रहा सदा जीवन भर, पल भर को भी सुख न पाया। सदा जली आशा की होली, टूटे सुपने जी भरमाया। दिशा मिली ना ही राह मिली, चले यहाँ हम ठोकर खा खा। बीता बसन्त पतझड़ सा बन, सारा जग मुझे लगा रूखा।

कैसी यह है हाय विवशता, तुम रोते आहें मैं भरता। देख रहा सब मिटा जा रहा, कुछ भी अपने हाथ न आता। तेरा कुछ कर सके नहीं हम, आंसू भी ना पोंछ सके हम। मुझको इतनी घुटन मिली क्यों, आँखें होती जाती है नम।

ढूंढ रहे थे एक बसेरा, जहाँ गुजारेंगे हम दिन। नहीं नियति को यह सब भाया, बीत रहे हैं रोकर दिन। ऐसा क्षण भंगुर जीवन है, सुख दुख का सब खेल यहाँ है। कितने टूटे नभ में तारे, उसकी गिनती कभी हुई है।

61ण

बना हम फ़र गया किधार, नहीं जाना सुनाये क्या? ना ली खबर रोये बहुत, हृदय में ऐसी चाह क्या? साथ हमारे होता तू, दिल की सुनाता सब तुमे। क्यों आंख हमसे मूंद ली, दिल जल रहा मेरा गमे।

आँख से है नीर बहते, दिल की यहाँ टीस कहते। ना चुभन कोई समझता, इस विराने में भटकते। जगत यह रंगीन सुपना, इसमें छिपा क्या राज है? मिलकर विछुड़ते हम यहाँ, इतनी छिपी क्यों व्यथा हैं?

आँख नभ में खोजती हैं, साथ मेरा खो गया है। जा रहे थकते यहाँ हम, न पता कहाँ जा रहे है।

62ण

बिताई जिन्दगी हमने, तुम्हारे संग तुम छोड़ा। मुझे मझधाार में लाकर, तुम मुझसे मुख क्यो मोड़ा। नयन में स्वप्न थे मेरे, न मैं उनको पकड़ पाया। तुझे क्यों आज खो कर भी, भटकता कुछ न कर पाया।

कहाँ जायेगी यह नौका, नही कोई ठिकाना है। लिखे है गीत आंसू से, समय सब बीत जाना है। भुलाते भूल ना पाते, तुम्ही सुपनों में छाते। पुकारे तुम नहीं आते, जगत की ठोकरें खाते।

डराती रात काली है, गई जीवन लाली है। नयन नभ को निहारे हैं, जग से हम तो हारे हैं। तुझे हम ढूंढते अब भी, कभी तो मिल ही जाओगे। मिले ना इस जनम में तुम, जनम अगले में पाओगे।

63ण

जो हम सोचे वह तू सोंचे, यह तो नहीं जरूरी है। बंधो हुए अपनी चाहत से, जग की डगर अनोखी है। नई नई हम आस लगाते, संग तेरे सुपने लेते। तुमने हमें भुलाया ऐसा, याद कभी भी ना करते।

सोंच सोंच कर हम रो लेते, यह पल हमसे ना कटते। बीच भंवर में छोड़ गया तू, दुख है अब तक ना चेते। अंखियाँ नीर गिराती टप टप, बरसे सावन सी झर झर। अपनी सुधा बुधा मैंने खोई, चुभन न जाती सुन पल भर।

आँखे पथराई ना आये, धीरज न कोई बंधाये। बना बाबला जग में डोलूँ, सुमन नहीं यह खिल पाये।

64ण

मुरझाने को तूल खिल रहा, कुछ भी थिर ना बहा जा रहा। जितने पोंछ सके तू आँसू, सुखमय जीवन हो खुशी बहा। यहाँ विवशता के घेरे में, जलते प्राणी दुख पाते हैं। बने हुए असहाय यहाँ पर, फिर आंख मूंद कर चलते हैं।

पड़े स्वार्थ के रेले में हैं, यह मनुआ बैचेन हो रहा। क्या जीवन का लक्ष्य नहीं कुछ, सभी यहाँ पर बहा जा रहा। आंख आंख में यहाँ झांक ले, दे उनको सुख छिपा हुआ सुख। जो तू देगा वह पायेगा, प्रेम ज्योति जलने से सुख।

प्रेम रूप ईश्वर को कहते, ;षी मुनी ज्ञानी सब भजते। प्रेम रूप जिसने ठुकराया, सुख की मिले कभी नही छाया। करूणा मय से करूणा लेकर, पार करो इस जग की नौका। यह दुनिया है भूल भुलैया, खो मत मिला हुआ जो मौका।

65ण

टूटे भी तो ऐसे टूटे, उठा नहीं हमसे अब जाता। कोई लूटे कोई मारे, देखें सब जिय भर भर आता।

जन्म लिया इस धारती पर है, स्वप्न संजोये सुन्दर सुन्दर। पर मालूम नहीं था हमको, लुटे बहेंगे आँसू झर झर।

कैसे इस मन को समझायें, तड़ न कोई भी लख पाये। दुर्लभ कहते जिस योनी को, अभिशप्त बनी हमें सताये।

साहस को जिसने त्यागा है, नहीं पूछने आता कोई। अन्तिम क्षण तक जो चलता है, जानो वही सूरमा सोई।

जिन आंखों में शून्य बसा हो, सृष्टि नाचती उसमें सारी। चलता जग के मेले में है, रखता नहीं किसी से यारी।

66ण

कहना बन्द हुआ सब अपना, बात न नीकी लगी हमारी। वसा यहाँ तू अपना सुपना, बिगड़ी अब यह कहानी सारी। अपनी अपनी लिये वासना, सब ही भटक रहे इस जग में। अपनी सूरत तुझमे देखूँ, भया बाबला इसी विरह में।

बतिया मेरी रास न आये, कैसे बतला तुझे रिझायें। जा कर भूल गया तू हमको, नयना झर झर नीर गिराये। किस प्रियतम से प्रीति बढ़ाई, सकूँ भूल न मीठी बतियाँ। मुझको भूला तू हरजाई, मुझे चिढ़ावे घर की गलियाँ।

याद तुझे कर यह पल जाते, नहीं कभी मेरी सुधि लेते। सांस तार यह टूटे जाते, घुटता जीवन तुम ना चेते। दीपक मेरा बुझता जाता, टूटे इस जीवन से नाता। जीवन में तेरे सुगन्धा हो, चाह यही मैं लेकर जाता।

67ण

बोले तुम ना हम रोये पर, यह किस्मत अपनी ऐसी है। स्वप्न रचे मैने कितने ही, जलती सबकी बस होली है। धारा रूप निर्मोही तुमने, छलिया बन कर है मुझे छला। जो आग लगा दी इस दिल में, मैं रोता हूँ दिन रात जला।

तेरे पद्चापों को सुनने, बैठा रहता दरवाजे पर। आओगे ऐसी आशा है, अंखियों से नीर गिरें झर झर। तुमको अधिाकार है रूठो तुम, जलता यह दिल दिन रात गमें। ना चुभन कलेजे की जाती, ढलती संधया ना कभी थमे।

विगती बातें ना भुला सके, रोये हम याद तुझे करके। तुम आंख उठा कर ना देखा, क्या मिला तुझे ऐसा करके। बीतेंगे जाते यह सब पल, तुम अपने सुपनों में बसना। यह नियति खिलाती खेल हमें, अपनी किस्मत में है जलना।

68ण

मत कर मत कर जग से शिकवा, अन्तस डूब मिटे सब पीड़ा। झिल मिल करती इन लहरों में, भटक रहे यह रोवे जिवड़ा। अपने अपने खेल खेल कर, सब ही खो जायेंगे जग में। खोज रहे जीवन के सुख को, छिपा हुआ जो अन्तस्थल में।

यह तुम मन में रखो दिलासा, चोंच दई चुग्गा वह देगा। कर्म करो नित हिये बसाये, सकल कार्य होंगे सुख देगा। बिन उसके दुख ही दुख बरसे, एक बूंद को सागर तरसे। बनी पहेली समझ न आये, अन्तस लखे ज्ञान तब बरसे।

सागर में बहता लहरों सा, जाने खेल सकल सागर का। क्या है अपना और पराया, कष्ट मिटे सब इस तन मन का। अगम अगोचर पार न उसका, बहो नहीं है कुछ भी अपना। दो पल के जीवन को जी ले, वैर भुला जीवन सब सुपना।

69ण

आंसू को तुम देख सके ना, कितना साथ निभाया हमने। आंसू की वर्षा है अब तो, वस्त्र लगे यह मुझको डसने। सब रह जाते वादे पीछे, साथ भाग्य जब ना देता है। बने विवश जलती होली है, कैसा कर्मों का लेखा है।

सृष्टिचक्र यह कैसा चलता, खिलने से पहले मिले कब्र। खड़े देखते रह जाते हम, टूटे जाते सब यहाँ सब्र। कितना कठोर पर पागल मन, डूबे नौका कुछ बोले ना। इस शून्य व्योम को देख रहा, टूटे तारे कुछ कहते ना।

क्यों है हाय ऐसी विवशता, नीर गिरे न सुमन खिले हैं। आग कलेजे में जलती है, चले जा रहे ना मिलते है। बीती जाती है यह घड़ियां, कुछ भी समझ न आती कडियाँ। छोड़ खड़ा है खेवट तेरा, बहता मौजों में यह दरिया।

70ण

चले जा रहे जाने वाले, नीर बहा लो रो रो कितना। ूल यहाँ खिल गिर जायेंगे, उनको तुम संभालो कितना। प्रकृति यहाँ पर खूब खेलती, नहीं उसे मतलब सुख दुख से। बनी हाय क्यों निष्ठुर इतनी, उम्र गुजारी रोते हमने।

आँखे देखे राह तुम्हारी, माना रोक न तुमको पाये। तेरी यादों में हम खोये, पल पल अंखियां नीर गिराये। मेरे थे जीवन बसन्त तुम, मुरझाई जीवन की कडियां। काली रात डराती अब तो, क्या होगा नहीं जाने हिया।

जन्मों जन्मों का बन्धान था, ऐसा हमने हरपल माना। डूबेगा यह बीच भंवर में, सोंचा कभी नहीं हम

71ण

बना हाय तू मुझ पर निष्ठुर, अखियां मेरी झरती झर झर। मेरी पीड़ को न पहचाना, टूट गया यह अपना ही घर।

कितनी देखी राह तुम्हारी, मैं रोया हूँ गम ने मारी। किस छलिये ने मुझे छला है, जीवन हाय हुआ लाचारी।

नयनों में थे मीठे सुपने, लहराता था दिल सावन सा। सुनी एक ना तूने मेरी, दिया नियति ने दुख क्यों ऐसा?

ूलों की नगरी में कांटे, पल पल दन्श हमें यह देते। साथ हमारा तूने छोड़ा, डर लगता हम हरपल रोते।

यह नौका हिचकोले खाती, कहाँ भंवर में डूब जायेगी। प्रियतम तेरी प्रीति बसी है, जग में हरपल महकायेगी।

72ण

जाते पल कुछ हैं बाकी, ेरो अंखियां मुझसे ना। प्रेम की बन्शी बजाओ, दिल रोता हर्षाओ ना। चल न पायें हम अकेले, मेरे संग तुम आओ ना। कठिन डगर यह है लम्बी, साथ रख गुनगुनाओ ना।

बसाया हृदय में तुमको, जियरा तुम बिन धाड़के ना। जिन्दगी की प्यास तू है, पानी बिन तरसाओं ना। देखो आंखों के मोती, तुम इन्हें ठुकराओ ना। ना भूल सकोगे हमको, जान लो तड़ाओ ना।

जल बिना मीन ना रहती, जायेंगे मिट जाओ ना। चाहते हम प्यार तेरा, देख हमको ूलाओ ना। छिपी तुझी में सब खुशियां, प्यारी बात बनाओ ना। बन पतंगा मिटेंगे हम, शलभ तुम्ही बन जाओ ना।

73ण

चलते चलते हम थके, जायें कहाँ ना पता। पीड़ा को ले जायेंगे, ना पा सके क्या खता? मोती बरसते आँख के, कौन सुने दुख अपना। विवश हो कर देखते हम, बीते जीवन सुपना।

गम को लगाये रो रहे, मन भूल सब क्षणिक है। कठपुतली बने नाचते, डोरी तो न हाथ है। संजोये तुमसे स्वप्न थे, दिया न साथ तुमने। ज्ञान भी अन्धाा हमारा, आ चुकी शाम ढलने।

ईश महका इस जगत को, ूल तेरे चमन के। जग अंधोरा दूर करना, दीप जलाना हिय के।

74ण

काफिला यह जा रहा है, रोके नहीं रूकता यहाँ। बस जान ले तू लहर है, अस्तित्व इतना ही यहाँ। इन्द्रधानुष सा खेल है, लहरें जलधा में नाचती। मन को बोझिल करता तू, बहती लहर सब छोड़ती।

लहरें बहें छोटी बड़ी, बता तेरा क्या हाथ है? दर्प में क्यों चूर इतना, सब ही नियति का खेल है। चलना पड़ेगा चल तुझे, चाहें हसों या रो यहाँ। सुर तू मिला ले जलधा से, देखो यही नाचे यहाँ।

नीर अपने कर समर्पित, कुछ ना है बस में अपने। टूटे कितने ही यह दिल, मिटे नहीं रंगीन सुपने। धयान सागर से हटा ना, मर्जी उसी की बहे जा। मर्जी तेरी नहीं चले, दर्द को पीये चला जा।

75ण

दुख से आंखें बोझिल इतनी, लगता सुनने को नहीं यहाँ। कैसा बदरंग हुआ जीवन, घुटती जाती हर सांस यहाँ। बरसे नभ लहराये धारती, तपती धारती को चैन मिले। अंखियां खोजे उस प्रियतम को, बरसे आंसू पर प्यार मिले।

यह खेल नियति का कैसा है, अंखियों में सुपने है तेरे। आंसू गिरते तू ना देखे, पा न सके हम गम में ठहरे। शून्य गगन सुनता ना क्रन्दन, हर चीख यहाँ पर खो जाती। कैसी समझाऊँ मैं मन को, कैसे लिख भेजूँ मैं पाती।

दो प्यार नहीं हम कुछ चाहे, मेरा जियरा तुम बिन रोवे। आंखों के झरते नीर कहें, छोड़ मुझे कहाँ तुम खोये। सब प्यार का बेकार हुई, क्यों बना हाय तू हरजाई। तेरी पर याद न जाती है, जीवन में अब तो तन्हाई।

76ण

मन समझ बढ़ा ना वैर यहाँ, समझ यहाँ सबकी अपनी है। सुर मिल जाते जब आपस में, जाते भर खलियान यहाँ है। गर्व न कर दो दिन का जीवन, मन प्रेम बढ़ा इसमें स्पन्दन। महक ूल सा तू इस जग में, ना जी कांटो जैसा जीवन।

पोंछ मिले सुख बहते आंसू, बह जायेगा तेरा भी दुख। पीर पराई जो भी जाने, सदा रहे ईश्वर के सम्मुख। जग में डोले बना बाबला, ना अपने हिय के पट खोले। प्रेम डगर को जिसने पाया, सकल सिf उसमें ही बोले।

करूणा का सागर लहराता, जियरा भीग भीग तब जाता। आंसू अर्धा चढ़ावें उसको, जो सबका है भाग्य विधााता।

77ण

चहुँ ओर विचरते भूतप्रेत, अवसर को देख रक्त पीते। तू कहती निज को है भोली, संग टोल उसी के तू होली। नहिं विवेक तू भोली कहती, दुष्टों के संग तू भी हंसती। दंश तुझे जब उनका लगता, तू चीख चीख कर फिर रोती।

निज का खून न देखा भूली, क्या तेरे कर्मो का लेखा। गि) बने वह रहे नाचते, बचा सकी न दिया धाोखा। अपने दुखों को रोई सदा, पर उसके दुख को ना देखा। लज्जित करती हाय खून को, किसके संग खेले है धाोखा।

अज्ञान कहें चालाक कहें, सबकी अपनी अपनी रेखा। संग खेले होली भूतों के, शिवभक्त कहें कैसा धाोखा। कमजोर अबल नारी रोती, देखो माँ की ममता खोती। विधाना को कोस रहे हरपल, निज दीपक नही जला पाती।

भोली बन छूटे पाप नहीं, तू समझ नहीं है संग कोई। जो हंसी गूंजती है दो पल, रचते हरपल वह चाल नई। संग भूत प्रेत के क्या रहना, तू खोज यहाँ अन्तस गहना। कुछ पल हैं जीवन के बाकी, संग छोड़ खोज तू अब सजना।

करूणा की अपनी आंखे ले, तू देख जगत ईश्वर भज ले। प्यार हृदय का कभी न खोना, यह सुगन्धा जीवन की ले ले। बहती धाारा बहती जाती, आंसू से जग सिंचित करती। जो अहंकार को छोड़ मिटा, देखे बस ज्योति वही जलती।

अपनी आंखो का प्यार बढ़ा, ना अहंकार से उसे दबा। जो खोज रही माँ की ममता, मत भेंट जगत के उसे चढ़ा। अपना दुख भूल प्यार दे दे, इसकी सुगन्धा तू भी ले ले। सुख कभी नहीं भूतों के संग, यह जान किनारा तू कर ले।

हरि भज हरि भज तू प्यार बढ़ा, बहते आंसू हरि भेंट चढ़ा। मत भूल उसे रखवाला वह, जाती संधया ना उसे भुला।

78प

कहने वाले सब मिले यहाँ, कोई करने को नहीं यहाँ। चल पैरों में जब तक ताकत, गिरने पर रोना नहीं यहाँ। खिलना मुरझाना खेल यहाँ, किस किस का लेगा दन्श यहाँ। मिट रही लकीरें सारी हैं, मन प्रीति बढ़ा तू नहीं यहाँ।

कितनी हाय संजोई आशा, पर विधि ने क्या फेंका पासा? मुझसे कितने दूर हुए तुम, बीता जीवन हुई निराशा। चलूं मगर अब चला न जाता, देख रहा सब टूटा नाता। विधि के यहाँ खिलौने हैं हम, देख जगत जियरा भरमाता।

आजा निंदिया तुझे बुलायें, लगे दन्श वह सभी भुलाये। वाणी का माधुर्य खो गया, चाह तुझी से प्रीति बढ़ाये। सुखद नींद में सो जाये अब, कलुष हमारा मिट जाये सब। छू ना पाया मैं वह गरिमा, बहते आंसू बह जायें अब।

टप टप गिरते आंसू बहते, गिरते माटी में मिल जाते। छोटे से जीवन को पाया, खुशियों के स्वर उठा न पाते। कितना सोंचा चलता संग मैं, दूर हुई पर तेरी छाया। वीराने में रहा भटकता, रूठा मुझसे मेरा साया।

79प

यह जीवन भागता जाता, खोज क्या पागल की है? इस सुनहले जग के अन्दर,जाम विष के पीये है। बह रहा झरना तू बह ले, सुर अपने तू उठाले। जा रहा जाने न मन्जिल, मिलते क्षण मुस्करा ले।

विवश हम चलना ही होगा, जाने कल कुछ न होगा। कठिन हो कितनी ही राहें, चले जा मिटना होगा। आशा के दीपक जलाये, टूटती पल में जायें। बह रही सागर में लहरें, बहती वह रूक न पाये।

छोड़ आशा रह ना प्यासा, मिलते पल पान कर ले। बदलती है रंग यह दुनिया, सच यह स्वीकार कर ले। कोई ना हरि बिन हमारा, सब चाहत का नजारा। मिल जायें सुर साथ गा ले, न मिले कर ले किनारा।

80ण

तुमको हमसे है शिकायत, दूर हम नहीं कर सके। प्यार की इक बूंद पाने, रो सके नहीं हँस सके। जिन्दगी हमसे है रूठी, होते अब मायूस हम। प्यार तेरा पा न पाये, सांझ ढलती डूबे गम।

नयनों मे तुमको बसाया, भूल मुझे क्यों न आया? याद तेरी फिर भी प्यारी, जलती है मेरी काया। इस क्षितिज के पार कोई, धुन बजा हमें बुलाता। वह कौन हमको रोक रहा, न समझ क्यों हाय पाता।

बीतती जाती घड़ियां, टूट जायेंगी कड़ियाँ। बीच जगत में नाचते है, सावन सी बहें अंखियाँ। गीत सुन लो झरते नयना, मुझको इक बार लख लो। भीड़ में खो जायेंगे हम, न मिलेंगे फिर समझ लो।

81ण

टूटे भी तो ऐसे टूटे, चला नहीं अब हम से जाता। मुझसे तूने आँखे ेरी, तोड़ा मुझसे सारा नाता। मन ना माने कितना रोये, किसको अपना प्यार दिखायें। नाम तुम्हारा हर आंसू में, कितना चाहे जिया रोये।

यादें तेरी मुझे मधुर हैं, सुपनों में बस तू ही तू है। तुझे भूल ना जी पायेंगे, जीवन का बस सत्य यही है। प्रीति पतंगा नहीं भुलाता, लिये प्रीति को वह मिट जाता। जलती रहे शमा इस जग में, निभा धार्म अपना मिट जाता।

तेरी यादों मे जीयेंगे, खो जायेगे तुझ यादों में। नहीं शिकायत कभी करेंगे, बहते जायेगे इस पथ में। बहता दर्द आंसुओं में जब,हिचकी लेकर हम तो रोते। दिल में है बस मूरत तेरी, चाह बांह तेरी में सोते।

82ण

चले चल कर हम न पहुँचे, क्या मेरा नसीब था? नीर की गंगा है बहती, तुही मेरा प्राण था। जहर तुमने जो दिया है, मर सके ना जी सके। बढ़ रही तड़न हमारी, दुख तुझे न सुना सके।

खुशी को मैं तो समेटे, तू न आया देखता। खेल खेला इस नियति ने, रह गया मैं सिसकता। बोल सुनने प्यार के दो, जिया मेरा तड़ता। क्यों बने तुम इतने निष्ठुर, दिल न तेरा पिघलता।

खो रही सारी कहानी, इस समय के चक्र में। बहें आँसू देख लो तुम, मिट सके फिर दिल गमे। तुझी को दिल में बसा हम, गुजारेंगे जिन्दगी। आओ या तुम ना आओ, नीर की लो वन्दगी।

83ण

नयन ने गंगा बहाई, तृप्त तुमको कर न पाया। नियति का यह खेल कैसा, साथ दो पल का न भाया। स्वर विछुड़ कर रो रहे हैं, कैसे समझाऊँ मनुआ। मर्जी कितना रूलाये, जलता जी उठता धूँआ।

दर्द से जख्मी हुआ दिल, छिप गया बेदर्द तू मिल। याद में हम मिट रहे हैं, कर न ऐसा बीतते पल। जहाँ अपना रो रहा है, तू न जाने अब कहाँ है? तृप्त धारती हो न पाती, बह रहा अश्रु प्रवाह है।

ूल को मग में विछाते, प्यार से संग गीत गाते। बीत जाती जिन्दगी यह, स्वप्न में भी ना भुलाते। तू जहाँ हो गम न आये, जियेंगे दिल में बसाये। इस क्षितिज के पार देखो, हँस रहा है गुनगुनाये।

84ण

मन को लगाते हैं यहाँ, गा रहे हैं गीत को। जा रही किस्ती ढुलकती, देखते हम नीर को। मफ करना तुम खता को, तुम विवश हम विवश है। बन सके न तुमने चाहा, चल रहे ना खबर है।

डूबे चाहें यह किस्ती, ईश मर्जी पार हो। सब मिटे शिकवे जगत से, चाहते न उदास हो। आंसू को न पोंछ पाये, कैसी यह विड़म्बना। क्यों सदा घुटते रहे तुम, क्या बनी प्रवंचना?

सहारों को पकड़ते हैं, छूटते जाते यहाँ। कैसी यह है मरीचिका, मन मीत न मिले यहाँ। समझ मन तू रो न पागल, कुछ समय की देर है। गीत गा ले हँस यहाँ पर, जग जल की लकीर है।

85ण

जलता अंधियारी राते, तुम मुझसे दूर हुए। अंखियों से पानी झरता, निष्ठुर क्यों हाय हुए।

तुमको बसाया नयन में, स्वप्न तेरे ही लिये। पर पलट कर तुम न देखा, दिल जला तुम चल दिये।

अनेकों रंग चाहत के, सजे रंगों से जहाँ। बदरंग सारा हो गया, तुम बिन रंग था कहाँ?

अश्रु से हम सींचते हैं, इस धारा की धूल को। ूल खिल जाये कहीं पर, ढूंढ़ रहे मुकाम को।

प्यार खो जाये कही ना, चाह मेरी है यही। प्यार में जलता रहूँ पर, प्यार गम छूटे नहीं।

ज्ञान की गंगा तुम्ही हो, निपट हम तो मूढ़ हैं। चल रहे ले याद तेरी, सब समय का खेल है।

86ण

यहाँ पर खेलता है रब, हुए बैचेन फिरते हम। नहीं अपना यहाँ पर कुछ, न पीछा छोड़ता यह गम। लहर उठती यहाँ गिरती, बता दो जोर क्या उनका। यह खेला देखो मनुआ, मेहमा जान तू पल का।

अनोखी यह डगर ऐसी, पता ना हम किधार जायें। कभी रोते कभी हँसते, जगत से कब बिछुड़ जायें। सहारे ढूंढते लेकिन, यहाँ पल में फिसल जाते। निहारें आँसुओं को ले, नहीं पर वह कभी आते।

जरा मेरे नयन देखो, बहते कितने ही आँसू। नहीं तेरा पसीजा दिल, बता कैसे तुझे ंासू? प्यार को स्वीकार करते, बीत जाती काली रैना। तुम हमें क्यों भूलते हो, तड़े सुनने को बैना।

87ण

क्या गलत है क्या सही है, जानते कुछ भी नहीं है। लहर उठ कर गिर रही है, अन्जाम जीवन यही है। कितनी आशा संजोते, धूल में मिले वह पल में। दर्द हम किसको दिखायें, हारे गा गा के नगमें।

अजनबी बन घूमते हैं, जाये मिल हमें सहारा। नयन में हम झांकते हैं, मग कटे दिल हाय हारा। चलते हैं खो जायेगे, ना पता कहाँ जायेंगे? जले आशा दीप मन में, किसी जगह कनायेंगे?

नयन से दो नीर गिरते, व्योम चुप है कुछ न कहते। पीड़ को देखे नहीं वह, ना किसी को दोष देते। अश्रु यह गीतों की धाारा, सदा ही बहती रहेगी। डूबो गम में तू हँस कर, ना प्रकृति कुछ भी कहेगी।

88ण

दर्द तुमने दे दिया है, दर्द हमने ले लिया। फिर रहे जग में भटकते, बुझ गया है यह दिया। खोजते मंजिल को हारा, मान तू था सहारा। गम न कर हम जा रहे है, डूब रहा यह तारा।

प्राण अकुलाते मेरे, नयन यह झर झर झरे। मैं कहाँ जाऊँ पता ना, चल रहे हैं कब गिरे। कितनी सुन्दर है दुनिया, रस कहाँ पर खो गया। कैसा यह झोंका आया, सभी मेरा लुट गया।

नीर नयनों के न देखों, तड़े हम तुमको क्या? वासना सभी की अपनी, ना समझते दोष क्या? कंठ भी अवरू) मेरा, प्राण भी जाते नहीं। क्या हुई गलती हमारी, जो तुझे पाते नहीं।

89ण

चलते चलते मिट जाना है, खेल यहाँ जीवन का ऐसा। चल कैसे यह तुझ पर निर्भर, ूल खिले जीवन में वैसा। हृदय धाड़कता निज को देखो, अन्तिम पल तक साथी देखो। चलता यह ब्रह्माण्ड ही सारा, रूकने में उल्लास न देखो।

कैसे चलना सोंच समझ ले, कांटों से बच अमृत पीले। सुख दुख खेल छिपा चलने में, चलता जा इस रस को पी ले। कितनी योनी नाचे जग में, नाचों काहे शर्माया है। मैं को छोड़ स्वयं को देखो, जानो उसकी ही माया है।

बहता जा तू हुआ समर्पित, मर्जी उसकी देगा छाया। तेरा क्या सब खेल उसी का, मन ना माने तो दुख आया। आँसू पोछ चलो तुम प्यारे, उपजे सुख यह जीवन संवरे। बहती जाती गंगा हरदम, कूल यहाँ पर खोते सारे।

पाना क्या है खोना क्या है, चलते जाना मिट जाना है। कूल मिलेंगे यहाँ अनेंको, जी भर देख जलधा आता है।

90ण

यहाँ मालिक की है मर्जी, उसे ही बस निभाना है। यहाँ सुख क्या मनाना है, यहाँ दुख क्या मनाना है। नहीं मर्जी यहाँ चलती, समय की धाार में बहते। कभी लगता सभी कुछ हम, कभी असहाय बन रोते।

समय की धाारा में बह ले, बहें आँसू उसे ही दे। झुकाये सिर चलो जग में, नहीं मैं को महत्ता दे। यह जीवन एक मेला है, विछुड़ जाना यहाँ सबको। दिल में प्रीति बस जाये, शिकायत फिर करें किसको।

सभी सुपने संजोते हैं, यहाँ सब ही उलझते हैं। सभी की है डगर अपनी, नहीं वह हाथ आते है। छटेंगे फिर तेरे बादल, वसा हरि को हृदय में ले। बही जाती है यह गंगा, पकड़ ना कूल बस बह ले।

९१ण

चलते ही हमें है जाना, मंजिल मन जान यही है। मिल रहे हैं सुख दुख जो भी, सह तप तेरा यही है। चले नाच उसी का सारा, अपना ना कुछ पराया। अजनबी सी दुनिया सारी, अब देखे कल पराया।

कितनी ही लहर हैं उठती, कितनी लहर है गिरती। उसका हिसाब नहीं कुछ भी, बहती है बस वह बहती। मन कूल पकड़ नहीं पगले, आ कर यह छूट जाये। कितने ही बहें आँसू पर, फिर हाथ नहीं आये।

पता नहीं कहाँ जायेंगे, अजनबी से हम फिरते। प्यार को मन रहा तड़ता, अँखियों से नीर गिरते। मर्जी प्रभु रहे तुम्हारी, साहस हमें तू दे दे। चलते हम तो है खिलौना, नौका को पार कर दे।

९२ण

मन कितने सुपने बने मिटे, सब खेल समय का है चलता। तेरा अपना क्या है जग में, लहरो सा फिर क्यों ना बहता। ना पकड़ यहाँ कुछ भी पगले, पल दो पल का है ऊसाना। जो आज सभी कुछ लगता है, क्षण में हो जाता बेगाना।

नयनों से नीर झरे कितने, निज को समझाना ही होगा। सब धूप छांव का खेल यहाँ, यह समझ यहाँ जीना होगा। बन लहर यहाँ बहता ही जा, तू जहाँ वहाँ तेरी मंजिल। सुख दुख की सारी परछाई, जो समय साथ होती धूमिल।

किससे शिकवा इस दुनिया में, सबकी अपनी अपनी उलझन। पागल पर तू ना माने क्यों, गिरता जाता थक कर यह तन। प्रीति बढ़ा सब छोड़ जलधा से, सबका वह ही तो मालिक है। मर्जी उसकी बस बहता जा, एक पहेली सच जीवन है।

९३ण

गिरें आंसू न देखे कोई, ले ले कर सिसकी को रोई। इतने मुझसे हुए बेका, जीवन की आशायें खोई। आंखे खोलो रहो न सोते, जीवन के मतलब को खोलो। बिना प्यार यह जीवन कैसा, आ जाओ अमृत को घोलो।

आ जायें कितने ही तूंफा, चाह ढूढ़ते तुझे रहेंगे। जब तक मौत नहीं दे धोखा, चलते गिर कर सदा रहेंगे। न तस्वीर न तेरा ठिकाना, किस मोड़ पर खड़े यहाँ हो। आरजू बैचेन मेरी है, तुम हृदय में मेरे बसे हो।

आँखों में था तुझे बसाया, फिर भी मुझसे हुआ पराया। सांस तेरे गीतों को गाये, ढूंढ रहे हम तेरा साया। तन मन तेरा ही प्रियतम, ढूंढ तुम्हें पाते न है दम। बहते नीर करें सिंचित मग, झलक मिले बैचेन हुए हम।

९४ण

जान सका ना सब कुछ बोझिल, कैसे खुश होगा मन पागल। कर कर जतन हाय फिर हारा, नहीं बु) ना राखे तू बल। बहो नियति संग आँख लड़ाओ, हाथ न कुछ कितना चिल्लाओ। जनम मरण का खेल चल रहा, इसी खेल में मन बहलाओ।

चलूँ हाय मैं गिर गिर जाऊँ, समझ न आये कैसे पाऊँ? तड़प न देखी जाती देखूँ, अंखियों से बस नीर गिराऊँ। कैसी दुनिया कैसे सुख हैं, पाप पुण्य में उलझे हम है। जाने ना कुछ हाथ हमारे, मैं की गठरी शीश धारे है।

यहाँ है मेहंगा दो पल के, मन बैचेन हुआ पागल है। उठा न पाते गीत प्यार के, साजन हमसे दूर हुए है। प्रभु संभालो झुका शीश हैं, चाह तुम्हारी जिय में भर दो। कुछ न दीखे हाय अन्धोरा, कुछ प्रकाश इस मग में कर दो।

९५ए

किस जगह पर हम गिरेंगे, हमको नहीं मालूम है। सांस यह जो चल रही है, बस प्यार की ही भूख है। साथ तेरे हम चलेंगे, बढ़ाये थे हमने कदम। तू पलट कर भी न देखा, क्यों रो रहे बैचेन हम।

सुपनों की दुनिया में यह, सब बीत जाती जिन्दगी। दुख हमें इसका रहेगा, कर सके न वन्दगी। नयन यह आँसू बहाये, जिन्दगी ना रास आये। लड़खड़ा कर चल रहे हैं, ना सहारा पास आये।

९६ए

दिल लगे करें है कोशिश, दिल नहीं लगता यहाँ। सुन ले दुनिया के मालिक, तू बता जायें कहाँ? देखते है राह को हम, अश्रु बह खाली हुए। दिल टिकाया था तुझी पर, क्यो न तुम मेरे हुए।

सांस यह क्यों चल रही है, क्या प्रतीक्षा कर रही? माने मनुआ न पागल, दौड़ते आवे नहीं। नयन में सुपने संजोये, यादें खोये कितना। न पलट कर उसने देखा, हुए बैचेन कितना।

प्यार चाहा पर न पाया, छाँव तेरी क्यों छिनी। जिन्दगी क्या चाहती है, कुछ नहीं तूने सुनी। सुन सकते तेरे बैना, बीते काली रैना। तू ही है श्रृंगार मेरा, जान ले कुछ न कहना।

९७ए

चल मन निभा दे तू यहाँ, कुछ भी नहीं है थिर यहाँ। चलता चला जा राह पर, सब जा रहे कुछ पल यहाँ। कुछ भी न अपने हाथ है, पल दो पलों का साथ है। जाते बिछुड़ मिलते नहीं, मन समझ ढलती शाम है।

अज्ञात को अपना यहाँ, अज्ञात में खोना यहाँ। अज्ञात सब अज्ञात है, अज्ञात में तू मिट यहाँ। मन चाहतें उठती यहाँ, रोती यहाँ हँसती यहाँ। जी भर यहाँ तू देख ले, ना फिर पता होंगे कहाँ?

सब स्वार्थ का मेला यहाँ, ना समझ फिर जायें कहाँ? शिकवा न कर चले ही जा, अज्ञात की लीला यहाँ। चले ही जा हँस कर निभा, देखा जगत आया यहाँ। न कर्म बिन कटता सफर, मन नीर को पोंछो यहाँ।

९८ए

प्यारे इन पल को जी ले, जायेगा जीवन यह कट। क्या बिगड़ेगा तुम्हारा, तुम करो नहीं मुझसे हट। स्वप्न आंखों में उतरते, तुम बिना यह प्राण रोते। कहाँ जायें हमें बोलो, अजनबी दुनिया भटकते।

चले हम थक हार टूटे, स्वर उठे न हमसे रूठे। क्या गुनाह मेरा बोलो, छोड़ कर बने हो झूठे। पीड़ दिल में है उबलती, जिन्दगी यह जाल बुनती। नयन यह आँसू बहाये, किस लिये न मेरी सुनती।

सब तरु छाया अन्धोरा, एक तुमको देखते हैं। तुम न छोड़ो मुझे मांझी, देख लो हम डूबते है। कुछ नहीं बस मफ कर दो, प्यार के दो नीर ले लो। बह रहे जायें कहाँ पर, प्यार से एक बार लख लो।

99ण

गीत अपने गा के सो जा, इस अन्धोरी रात में। दिल में चाहत जो बसी है, सुपने तैरें नयन में। शब्द दो सुनना ही चाहें, अश्रु यह नयन बहायें। चले थक कर अब तो हारे, ना बोले कौन आये।

जाम तो मस्ती का चाहे, भूल कर दुनिया के गम। कैसी है किस्मत हमारी, संग छोड़ा पाया गम। नहीं किसी ने हाय देखा, भाग्य ने न हमें चूमा। करते क्या शिकवा किसी से, प्यासा ले प्यास घूमा।

पार करते नदिया हँस कर, प्यारी दो बाते करते। पर यह कैसा मोड़ आया, सांझ जाती ना लखते। जोड़ ले पागल तू नाता, खेल हमें क्या खिलाता। बह रही नदिया यह देखो, कर समर्पित सब बहता।

100ण

जीवन नदिया बहती जाती, आशाओं के सुपने बुनती। कितने ही दन्श लगे मग में, ना छोड़ मोह को वह पाती। अकुलाता रोता यह जीवन, देखे आयेगा कब सावन। टीस छिपी क्या दिल के अन्दर, जाती बढ़ती यह हाय चुभन।

कैसे समझाऊँ नयनों को, जो नीर गिराते हैं झरझर। दो पल की खुशी मिली ना क्यों, जीवन होता जाता दूभर। उड़ जाऊँ पंख लगे मन में, पर हुआ विवश निज को देखूँ। दुनिया की भूल भुलैया में, कुछ समझ सकूँ ना मैं चीखूँ।

छूट गया सब साथ हमारा, खुशियाँ सारी ही मिटा गया। जीवन की काली रातों में, नहीं पता बुझेगा कब दिया। प्यास प्यार की लेकर घूमें, ढूंढ सके न वह अमृत जल। आंखों में बस आँसू गिरते, जीत सके न हम तो निर्बल।

101ण

दो पल खुशी हमको मिले, चलते रहे हम रात दिन। चल चल गिरे गिर कर उठे, पहुँचे नही ढल रहा दिन। स्वागत करें हम नीर से, कुछ पास में मेरे नहीं। दिल की कसक को लख सको, बस प्यार चाहें कुछ नहीं।

कितना व्यथित बैचेन दिल, चहुँ ओर तुमको खोजता। पाता नहीं कोई ठिंका, गुनाह क्या यह पूछता। दिल में छिपा कर पीड़ को, चलता रहा मैं रात दिन। लो आ रहा सागर निकट, दुख जायेंगे सारे छिन।

स्वीकार कर सागर यहाँ, सागर यहाँ का सत्य है। जो कुछ मिले तू गुनगुना, यही आदि मधय अन्त है। मर्जी उसी की खेलता, सब ओर उसका शोर है। बह लहर बन मैं को हटा, जानो न अपना जोर है।

102ण

कुछ भी नही यहाँ मैं, उगता ढलता यह दिन। न खत्म होता क्रन्दन, तारों को हारा गिन। सुपनों को ले रोते, चाहत को ले ंसते। पागल बन कर घूमूँ, लिये जख्म को रिते।

ले कर झोली घूमूं, बस प्यार नाम जानूं। समझाऊँ कैसे दिल, किसको अपना मानूँ। नयना झरते झर झर, धुंधाला है पथ किधार। आशाओं में खोया, घबराता जिय थर थर।

यहाँ जन्म ले घूमें, किसको पीड़ा कह दें। बोझिल अपने से सब, क्यों निज पीड़ा हम दे। खिलते गिरते पत्ते, कुछ खेल रहा बाकी। यह भी रूर कटेगा, निकले देखो झाँकी।

103ण

प्यार मिले तो रस्ता दीखे, इस जीवन के गीत अनूठे। तेरे बिन मुरझाई बगिया, कैसे गाऊँ तुम जो रूठे। पगडण्डी पर संग तुम्हारा, मिले गगन में मैं उड़ जाऊँ। बोझिल जीवन तुम बिन लगता, संग तुम्हारा कैसे पाऊँ?

इन नयनों में तुझे बसाया, नीर बह रहे अब तो झर झर। निर्मोही बन क्या लोगे तुम, कुछ पल के हम यहाँ मुसाफिर। आँखियाँ हारी राह निहारें, आँख न ेरो प्यारे छलिया। नाचे सावन गाये कोयल, करें प्यार की प्यारी बतियाँ।

तुम बिन हारा जग यह खारा, कित ले जाये जीवन धाारा। गाते नगमे तेरे संग हम, पर खोया जीवन आधाारा। बहते आँसू नहीं लखो तुम, याद तुम्हारी ले जी लेगे। बीत गये पल तेरे संग जो, उन यादों को ही पी लेंगे।

104ण

यह जिन्दगी बस "लाप है, किस बात का कह नाज है। घूमता बन्दर बना मैं, ना जानता क्या राज है? अजनबी दुनिया मिले हम, चले जायें फिर कहाँ हम? क्यों रहे इतरा यहाँ पर, कब निकल जाये यहाँ दम।

जल यहाँ कितना बरसता, प्यास को लेकिन तरसता। नाच ले उसके इशारे, कर्म अपने तू समझता। प्यार को हम सब भटकते, खाली झोली हम रीते। अश्रु नयनों से बरसते, राज कुछ ना पर समझते।

माँग क्या मिलता यहाँ पर, खुशी ले उसकी रजा पर। चलता जा जब तक ताकत, ना समझ अपना यहाँ घर। कह चुके कह सभी हारे, देख ले जग के नजारे। जाती बहती यह गंगा, बहते हैं हम तो हारे।

105ण

एक गम हो तो कहें, गम अनेंको है यहाँ। खोजते है मन्जिलें, ना पता खोई कहाँ?

चलते पर ना जाने, ना खबर कल हो कहाँ? बह रही यह जिन्दगी, पीड़ा ऊनती यहाँ।

प्यार को दिल तरसता, क्यों नहीं तू पिघलता? झूमती सारी प्रकृति, नीर देखो तड़ता।

देख ले मोती बहे, प्यार की हार होती। छोड़ हम जायें कहाँ, ढले दिन रात होती।

टूटा दिल कहता क्या, नयन से हुए ओझल। तुम बिना सूना हुआ, कर रहा मुझे गाफिल।

देखो नजरों से तुम, बिन तेरे जलते हम। खत्म हो कब जुदाई, देखते है राह हम।

106ण

अलविदा अब दोस्त प्यारों, कुछ नहीं कर पाये हम। तुम हमें अब भूल जाना, कुछ नहीं करना है गम। हार कर हम तो चले हैं, बिखरे मोती टूट कर। यहाँ गुलशन तुम खिलाना, ना शिकायत हमसे कर।

ना पता जाये किधार हम, छूटता है अपना घर। बेरहम तुमको न कहता, नीर को नहीं देख डर। कांपते हैं कदम मेरे, नहीं हँस मेरे घेरे। सब यहाँ मर्जी उसी की, दुख न कर भाग्य तेरे।

नयन में तुमको बसाया, क्यों नहीं तुमको पाया। बदलती है रंग दुनिया, साथ छोड़े निज साया। अश्रु को यह धारा पीती, पी रही फिर भी जीती। रंग कितने ही खिलाती, भूल सभी कथा कहती।

107ण

प्यार तुझी से करते, यह नीर बहे लख लो। दीक्षा ज्ञान की दी, पीड़ जगत की हर लो। अनजानी सी दुनिया, थामे तू ही बैया। चल कर गिरे यहाँ हम, खोज रहे है छैंया।

लिये प्यार के सुपने, हम घूमते धारा पर। जब टूटते बिलखते, तू शान्ति का लगे घर। प्यार हमें दे अपना, बीतेगा यह सुपना। नयन से नीर बहते, तुझे बनाऊँ अपना।

रवि का खिला उजाला, धो दर्द यहाँ डाला। ले लो नमन हमारा, प्यारी तेरी हाला। सब ओर गूंजता जो, अनहद बाजा बजता। पर हाय क्यों न सुनते, सदा इशारे देता।

मिलता नहीं किनारा, खोज रहा मैं सैया। दे दे हमें उजाला, पायें प्यारे सैंया। न भूल हमको जाना, तुम याद हमें रखना। चल कर गिरें कभी हम, तुम थाम हमें लेना।

108ण

मन से मन को समझा पागल, जीवन तो यह बहता बादल। ले चले हवा ना बस चलता, बरसे नयनों से कितना जल। नगरी अनजान मिलो सबसे, सुख दुख बाटो खेलों उनसे। अपना ना कुछ मिलना कुछ पल, कर ना शिकायत तू इस जग से।

सुपनों की नगरी में डोलें, आवें हाथ न कुछ फिर रोवें। व्याकुल मन पिंजड़े का पंक्षी, शाश्वत हम तो ऐसे जीवे। मेहमां यहाँ के हम कुछ पल, कितना समेटे जाये बिखर। नयन बहाये तू क्यों आंसू, मर्जी न अपनी जाये किधार।

कठपुतली हम उस मालिक की, चलता जा मन इतना ले गुन। नचा रहा वह नाच रहे हम, बाज रही सब ओर वही धुन। अर्पित कर दो नीर बहे जो, शुभ जो लगता उसको कर ले। पीड़ा के सागर में बहता, जग पीड़ा कुछ तू भी हर ले।

109ण

नयन के ना नीर देखे, क्यों तुम हुए मुझसे खफा। सब मंजिलें हैं खो गई, यह हो गई दुनिया खफा। चल रहे पर ना ठिकाना, बीत जायेगा जमाना। याद आती ही रहेगी, भूल चाहे हमें जाना।

दिल धाड़कता तुम बसे हो, कैसे हम तुझे भुलायें? तुम हो निर्मोही छलिया, पथ निहारें तू न आये। खिलखिलाती जिन्दगी में, आया यह कैसा झोंका। न संभल पाये विवश हो, टूटी देखें यह नौका।

खोजते तुमको रहेंगे, बीत जायेंगे सभी पल। मन न गम कर जग कहानी, बरसायेंगे नयना जल। याद तुम्हारी मधुर है, बीतेगी सांझ सारी। जा रहे कुछ गम न करना, मिले खुशियाँ तुझे सारी।

110ण

दिन उगता दिन छिप जाता है, नहीं पूछने आता कोई। प्रियतम की प्यारी यादें ले, सुबक सुबक कर मैं हूँ रोई। काली रैना मुझे डरावे, अंखियां भर भर नीर गिरावे। उस बिन जीवन है यह दूभर, मिले सजन जियरा हर्षावे।

सुपने नयनन में जब तैरे, अंग अंग में बिजली कोंधो। खोई रहूँ उसी में हरपल, चैन उसी में दिल यह साधो। प्यारी प्रियतम की बातें वह, कभी हँसावे कभी रूलावे। उड़ा उड़ा यह जावे जियरा, बाट निहारूँ वह कब आवे।

आये सावन कोयल गाये, बिन उसके यह जिय घबराये। गिन गिन तारे हार गई मैं, पत्थर दिल पर वह न आये। उस बिन रूखा लगता यह जग, पथराई आंखे रस्ता तक। पंख कहाँ से लाऊँ प्रियतम, उडू और पहुचूँ मैं तुझ तक।

111ण

किस्मत मेरी ऐसी है, हम दोष दें किसको बता? संसार में हम घूमते, ना जानते दिल की खता। दो बूँद की खातिर फिरे, पर कंठ प्यासा ही रहा। कैसे तुम्हारे प्यार को, पाऊँ जिया यह रो रहा।

आओ मिटे तंहाई यह, तुम रूठ क्यों मुझसे गये। बैचेन दिल को देख लो, किस ख्वाब में तुम खो गये। दिल है नहीं लगता यहाँ, क्यों लूटते मेरा जहाँ। ग़ीका लगे सब कुछ यहाँ, तुझी में है सारा जहाँ।

आँखें बिछाऊँ याद कर, बंशी मेरी का तू ही स्वर। तू देख ले झरते नयन, ना भूल मुझको प्यार कर। तुम आ मिलो सजना मुझे, आयें बहारें लौट कर। तुम बिना हम जल रहे है, सूखा जाता है यह सर।

112ण

दिल नहीं लगता यहाँ पर, किसको सुनाये दर्द हम? नयन से आँसू निकलते, पीड़ नहीं होती है कम।

बेका जालिम जमाना, दौड़ें पर है बेगाना। जिन्दगी में हार थक कर, ढूंढता हूँ मैं ठिकाना।

अरमा मचलते ही रहे, हम तो तरसते ही रहे। ना नजर तूने उठाई, घुटते सदा हम तो रहे।

प्यार बिन रूखा जहाँ है, दिल नहीं टिकता यहाँ है। कैसे समझाये इसको, मानता ना बेका है।

सांझ ढलती जा रही है, जानूँ न कब हो सबेरा। सब जगह दीखे अंधोरा, टूटता न मन का घेरा।

113ण

किस जगह पर हम गिरेंगे, ना पता खोई डगर। नयन में ना नीर लाना, ना करेंगे अब खबर। साथ दिन थे जो बिताये, भूल जाना स्वप्न था। सब बदलता जा रहा है, नियति को मन्जूर था।

शाम ढलती जा रही है, आ निशा ले हार को। पहन हम न कुछ कहेंगे, पायेंगे उस पीव को। गिर कर उठे फिर फिर चले, पर संग तेरे न चले। कौन सा वह मोड़ आया, छोड़ हमको तुम चले।

नयन से आँसू बरसते, कौन सी याद लेते। आस किसकी तू लगाये, वीर संग धाार बहते।

AANKHEN NAAM HAIN……

BY CHANDRA PRABHAKAR